RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : MISC-II/CPM/09/KPHO/2014-17
प्रधान डाकघर कानपुर–डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/–

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मार्च–2016 | वर्ष – 08 | अंक : 02 | मूल्य : 5/–

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (इं. जल संस्थान इलाहाबाद), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
सहायक ब्यूरो चीफ (उ.प्र.) : चन्द्रिका प्रसाद ओमर, 49ए/52–बी, ज्यौरा, आजाद नगर, कानपुर, मो.: 9305256450
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी–5, श्यामलाल का ताता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम हिन्दुस्तानी, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
फुरकान खान, मो. : 8081577681
राकेश समुन्द्रे, मो. : 9889727574
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कन्नौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001,
मो. : 09887512360, 0144–3201516
घिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला–अलवर, मो.–09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपावक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा–नवीन मार्केट, कानपुर
खाता सं.–33496621020•IFSC CODE-SBIN0005307

सिर्फ दलितों के हितैषी नहीं हैं अंबेडकर

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का संघर्ष मुख्य रूप से सामाजिक अन्याय के खिलाफ था। वर्ण–व्यवस्था के शिकार मुख्य रूप से दलित हैं, परंतु अब इनके विचारों की जरूरत और लोगों को भी पड़ने लगी है। शूद्र, जिनकी संख्या आबादी का लगभग 25 प्रतिशत है, हजारों वर्षों से ज्ञान, धर्म, शासन–प्रशासन आदि क्षेत्रों से वंचित रहे, लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि देश या समाज के अन्य वर्ग इस व्यवस्था से लाभान्वित होते रहे हैं। वर्ण–व्यवस्था का सीधा दुष्प्रभाव दलितों व पिछड़ों के ऊपर दिखता है, लेकिन तथाकथित सवर्ण भी परोक्ष रूप से खामियाजा भुगतते रहे हैं और यह आज भी जारी है। जब सामाजिक विघटन के कारण देश गुलाम हुआ, तो सवर्ण भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। किसान आंदोलन हो या मजदूर आंदोलन अथवा अन्य कोई, ये अपनी मंजिल नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, तो इसका कारण इनका जातियों में बंटना हैं। अंबेडकर ने जातिविहीन समाज की स्थापना की लड़ाई लड़ी और यदि इनके विचार को समाज ने माना होता, तो आज सम्पूर्ण भारत विभिन्न जातियों में न बँटा होता?

लोग समझते हैं कि अंबेडकर सिर्फ दलितों के हितैषी थे, जबकि जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में कानून मंत्री के पद से उन्होंने इस्तीफा महिलाओं के मुद्दे पर दिया था। नेहरू से उन्होंने पहले ही बात कर ली थी कि महिलाओं को संपत्ति में बराबर का अधिकार देने के लिए वह एक बिल पेश करना चाहते हैं। नेहरू ने उन्हें अपना समर्थन देने का वायदा भी किया था। लेकिन कट्टरपंथियों के विरोध के कारण नेहरू पीछे हट गए और अंबेडकर द्वारा संसद में पेश किया गया हिंदू कोण बिल निरस्त हो गया। इससे अंबेडकर बेहद आहत हुए। इस्तीफा देते हुए उन्होंने कहा था कि हजारों वर्षों के शोषण के बाद महिलाओं को पुरूष समाज बराबर का अधिकार देने को तैयार नहीं है। यहाँ लोगों को यह जान लेना आवश्यक है कि अंबेडकर ने महिलाओं के हक के लिए कानून मंत्री की कुरसी को लात मारी थी। उस बिल के संसद में पारित हो जाने से तथाकथित सवर्ण महिलाओं को ही ज्यादा लाभ मिलता, क्योंकि उन्हीं के घरों में जमीन–जायदाद ज्यादा थी। इसके अलावा अंबेडकर ने यह भी कहा था कि जमीन का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए, जो हो न सका। अगर ऐसा हो गया होता, तो सामंतवादी वर्जनाएं तो नष्ट होतीं ही, कृषि भी वैज्ञानिक तरीकों से की जाती। समस्त जमीन का फसल के लिए उपयोग होता, जो हो नहीं सका और अब भी नहीं हो रहा है, क्योंकि जमींदार खुद तो खेती करता नहीं, दूसरों से करवाता है।

अंबेडकर ने बौद्ध धर्म को अपनाया था। 'धम्म' का आशय नैतिकता से है। बुद्ध के विचार का निहितार्थ यह है कि एक मानव अन्य मानवों, वातावरण और धर्म की आम धारणा यह है कि पाप का प्रायश्चित मानव मंदिर जाकर एवं तीर्थयात्रा करके करता है। लेकिन भगवान बुद्ध कहते हैं कि प्रायश्चित तभी संभव है, जब वह माफ कर दे, जिसके साथ अन्याय हुआ है। इस प्रकार बौद्ध धर्म अपनाकर अंबेडकर ने धर्मनिपेक्षता के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान किया। गौरतलब है कि जहां–जहां दलित आंदोलन फैला, वहां–वहां सांप्रदायिक सौहार्द्र बना रहा।

अंबेडकर संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष थे और जब–जब अनुच्छेदों के ऊपर संविधान सभा में चर्चाएं हुईं, नब्बे प्रतिशत जवाब उन्हीं से मांगे गए। उन्होंने दिए भी। उन्होंने कहा था कि जब तक सामाजिक जनतंत्र कायम नहीं हो जाता, तब तक राजनीतिक जनतंत्र अधूरा है। जबकि आज देश की राजनीति में जाति की योग्यता सबसे बड़ी है, चाहे वह भ्रष्ट हो या गुंडा। आम लोग गैर–जिम्मेदाराना टिप्पणी करने में पीछे नहीं रहते कि नेता चोर और राजनीति भ्रष्ट लोगों का अड्डा है। जनतंत्र में प्रजा अपना राजा चुनती है। अतः जैसी प्रजा होगी, राजा भी वैसा ही होगा। ईमानदार आदमी चुनाव लड़ने की हिम्मत नहीं करता। भारत यदि जातियों में न बँटा होता, तो हमारे यहां भी चुनाव रोजी–रोटी या विकास के मुद्दे पर होते। इसलिए कहा जा सकता है कि अन्य क्षेत्रों की तुलना में राजनीति के क्षेत्र में अंबेडकर के विचार कहीं ज्यादा सार्थक हैं।

भले ही यह दावा किया जा रहा हो कि इस समय भारत की आर्थिक तरक्की तेजी–से हो रही है, लेकिन यह भी सच है कि ग्रामीण क्षेत्र आधुनिक विकास, तकनीक एवं विज्ञान से हजारों मील दूर है। स्वस्थ राजनीति के बिना दूसरे क्षेत्र अपेक्षित रफ्तार से काम नहीं कर सकेंगे, तो बड़े शहरों और गांवों की दूरी बनी रहेगी। विडंबना यह है कि अंबेडकरवादी दलित भी जाति के पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं हो पाए हैं। ये दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि वे इनके साथ जात–पांत का भेदभाव न करें, जबकि दलितों की तमाम उपजातियों के बीच जात–पांत की भावना बहुत अधिक है और इसे दूर करने का कोई प्रयास भी नहीं किया जा रहा। भले ही फेफड़े से बोल–बोलकर वे अंबेडकरवादी होने व उनके विचारों का प्रचारक होने का दावा करते हों, पर उनके स्वयं के जीवन में मनुवादी भाव का प्रभाव साफ दिखता है। हाल ही में जब सरकार ने आरक्षण का लाभ देने के लिए दलितों को विभिन्न समूहों में बांटने की मुहिम चलाई, तो उन्होंने उसका विरोध किया। करना भी चाहिए था। लेकिन मुद्दा यह है कि क्या वे असली बँटवारे के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं? क्या अभी निम्न जातियां, सभी अंबेडकरवादी आपस में रोटी–बेटी का संबंध बना पाए हैं? यदि ऐसा नहीं है, तो जो अंबेडकरवादी नहीं है, उनसे क्या अपेक्षा की जाए? यदि अंबेडकर के विचारों का निचोड़ निकाला जाए, तो हम पाएंगे कि जातिविहीन समाज की स्थापना करना ही उनका उद्देश्य था।

अंबडेकर के आदर्शों से मानवता की सच्ची लड़ाई लड़ने की प्रेरणा मिलती है, भले ही अपने जीवनकाल में सच्चे लोगों को मान्यता न मिले, परंतु आने वाले दिनों में वह मिलकर रहती है, इसलिए लोगों को क्षणिक लाभ, लालच, प्रसिद्धि, सफलता के चक्कर में सच्चाई के मार्ग से डिगना नहीं चाहिए।

सामार – दलितों के दलित
स्थिति, परिस्थिति और संभावनाएँ
पृष्ठ सं. 210 से 212
हरकिशन सन्तोषी

अंधविश्वास का उन्मूलन

अंधविश्वास के उन्मूलन में पेरियार की भूमिका को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें पहले उस जमीनी हकीकत को समझना होगा जिसमें उन्होंने अपना अभियान शुरू किया।

उन दिनों, यदि सब नहीं तो अनेक नीची जाति वाले निपट अनपढ़ थे और शिक्षा पर ब्राह्मणों और कुछ अन्य ऊंची जातियों का एकाधिकार था। जीवन के सभी क्षेत्रों में, समाज अंधविश्वासों से ग्रस्त था। सिर पर चोटी और तन पर धागा लटकाए रहने वाले ब्राह्मणों के हाथों में आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार की सत्ता थी। लोग उन्हें मानव रूप में भगवान समझतें थे और उन्हें इसी तरह संबोधित भी करते थे। लोग अपने तौर–तरीकों में कोई बड़ा या छोटा बदलाव करने के लिए भी ज्योतिषियों और हस्तरेखा शास्त्रियों से परामर्श करते थे।

कुत्ते या बिल्ली का रास्ता काट देना, कौए या गिद्ध का विशेष दिशा में उड़ना; बातचीत के बीच किसी विशेष क्षण में छिपकली या घंटे की आवाज सुनाई देना, घर से निकलने पर सबसे पहले कोई विधवा अथवा अकेला ब्राह्मण दिखाई दे जाना–ये सभी अच्छे या बुरे शकुन होते थे। प्रत्येक वर्ष में अशुभ महीने, प्रत्येक महीने में अशुभ दिन, प्रत्येक दिन में अशुभ घंटे होते थे और लोग उस दौरान कोई भी नया काम शुरू करने से डरते थे।

कोई दस वर्ष का ब्राह्मण बालक भी साठ साल के गैर–ब्राह्मण से आराम से इस तरह से बात कर सकता था मानो वह उसका गुलाम हो और उसे तमाम तरह की उपाधियों से विभूषित कर देता था। आबादी के बहुसंख्यक लोग इस अपमान को बिना चूं किए सहन कर लेते थे, क्योंकि वे सब यही मानते थे इस तरह बरता जाना उनकी नियति थी। लोगों का विश्वास था कि ब्राह्मण का क्रोध पूरे कुटुंब का नाश कर सकता है और ब्राह्मण को संतुष्ट करना ईश्वर को संतुष्ट करने के बराबर माना जाता था। अधिकांश लोगों के माथे पर तिलक होते थे और वे जन्म और मृत्यु के अवसरों पर होने वाले समारोहों में गाय के मूत्र, दूध, दही और घी का मिश्रण पीते थे।

इस वातावरण में पेरियार ने तूफान की तरह प्रवेश किया और यह गर्जना की कि बस बहुत हो चुका। जब उन्होंने 1925 में अपना स्वाभिमान आंदोलन शुरू किया, तो उन्होंने यह घोषणा की कि उनका एकमात्र लक्ष्य द्रविड़ समाज को एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें स्वाभिमान और बुद्धि हो। उनका कहना था कि उनमें चाहे आवश्यक योग्यता और खूबी नहीं भी हो, तो भी वह यह सेवा करते रहेंगे क्योंकि और कोई इसे अंजाम देने के लिए आगे नहीं आ रहा था। जब कभी वह किसी सभा को संबोधित करते जाते, तो उन्होंने यह नियम बना लिया था कि वह अपने साथ संबंधित मौलिक धर्म ग्रंथ ले जाते थे और लोगों को दिखाते थे कि वह जो कुछ भी कह रहे थे वह उनकी कल्पना की उपज नहीं थी, अपितु वह तो धर्म ग्रंथों में लिखी कथाएं ही दोहरा रहे थे।

पेरियार ने लोगों से कभी यह नहीं कहा कि वह जो कहते हैं वे उस पर विश्वास करें ही, अपितु वह तो लोगों से यह कहते थे कि वे उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनें, आराम से उस पर विचार करें और उन्हें यह सही लगे तभी उस पर अमल करें और जो उन्हें असत्य लगे उसे वे निःसंकोच छोड़ दें।

पेरियार को यह समझ में आ गया कि तमिलनाडु के पूर्व सुधारक वल्ललार इसलिए असफल हो गए क्योंकि उन्होंने ईश्वर की अवधारणा को तोड़े बिना समाज को बदलने का प्रयास किया और बौद्ध धर्म (जो अनीश्वरवादी नहीं तो नास्तिकवादी अवधारणा तो थी ही) का पतन इसलिए हो गया क्योंकि इसमें ब्राह्मणों को प्रवेश दे दिया गया जिन्होंने बाद में बुद्ध को लेकर अनेक अंधविश्वासी कहानियां गढ़ दीं, इसीलिए पेरियार ने यह तय कर लिया कि वह ईश्वर और ब्राह्मण दोनों को अपने आंदोलन से बाहर फेंक देंगे और यह घोषणा कर दी कि वह सुधारक नहीं, क्रांतिकारी थे।

बुद्ध और अतीत के अन्य महान चिंतकों के विषय में बोलते हुए, पेरियार कहा करते थे कि कोई व्यक्ति कितना भी महान चिंतकों के विषय में बोलते हुए, पेरियार कहा करते थे कि कोई व्यक्ति कितना भी महान क्यों न रहा हो, उसका ज्ञान सीमित ही था। उसका अंधानुसरण करना एक और तरह का अंधविश्वास होगा।

पेरियार एक समर्थ वक्ता भी थे और धुआंधार लेखक भी। उनके भाषण और लेख धार्मिकों के खेमे में तहलका मचा देते थे। लगभग आधी शताब्दी तक, पूरे वर्ष वह भ्रमण पर रहते और केवल अपने ही नहीं अपितु उत्तरी राज्यों में और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ देशों में भी उन्होंने लोगों को संबोधित किया।

वह समझाते थे कि धार्मिक होना एक निजी मामला था और नैतिक होना एक सार्वजनिक मामला क्योंकि अधार्मिक व्यक्ति किसी भी प्रकार से समाज को हानि नहीं पहुंचाता, जबकि एक अनैतिक व्यक्ति अपने स्वभाव के कारण निश्चय ही हर संभव तरीके से ऐसा करेगा ही। उन्होंने यह भी बताया कि कोई भी धर्म अपने अनुयायियों से नैतिक आचरण का आग्रह नहीं करता, अपितु केवल प्रत्यक्ष आज्ञाकारिता और निष्ठा की मांग करता है। पेरियार ने आत्म–त्याग, मानवीयता और महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने का प्रचार किया और स्वयं भी उस पर अमल किया।

उनका अनीश्वरवादी चिंतन भी ईश्वर को नकारने से इतना नहीं अपितु मानवता में उनके विश्वास से अधिक प्रेरित था, क्योंकि उन्होंने देखा था कि देवत्व में विश्वास ही मनुष्य जाति की प्रगति की मुख्य बाधा थी। उन्होंने जब यह समझ लिया कि कालांतर में शिक्षा ही अंधविश्वास के उन्मूलन में सहायक होगी, तो उन्होंने शिक्षण संस्थाओं में पिछड़ी और अनुसूचित जातियों के आरक्षण की लड़ाई लड़ी और उसे जीता भी। उनकी दृष्टि में, प्रार्थना एक सम्माननीय किस्म का भिक्षाटन ही है जिसका कारण लालच होता है।

अनेकानेक उदाहरण देकर, उन्होंने लोगों को यह समझाया कि स्वास्थ्य और बीमारी, जन्म और मृत्यु, अमीरी और गरीबी पूजा करने वालों के जीवन में भी आती है और नास्तिक के जीवन में भी। एक बार एक मुसलमान से बातचीत के दौरान, पेरियार ने उससे पूछ लिया कि क्या वह हिंदुओं और ईसाइयों के ईश्वरों में भी विश्वास करता है। उस मुसलमान ने 'नहीं' में जवाब देते हुए कहा कि वह केवल अल्लाह में विश्वास करता है। इस पर पेरियार बोले कि वह उसके केवल एक बात में उससे भिन्न थे कि वह अल्लाह में भी विश्वास नहीं करते।

जो व्यक्ति यह विश्वास करता है कि उसे प्रार्थना करने से मनचाही वस्तु मिल जाएगी चाहे वह उसके लिए उचित काम नहीं भी करे, ऐसे व्यक्ति की तुलना वह उस व्यक्ति से करते थे जो जमीन को जोतता नहीं, उसमें बीज नहीं बोता और उसे सींचता नहीं और हंसिया लेकर फसल काटने पहुंच जाता है। वह जब अंधविश्वासों पर प्रहार करते थे तो एक नहीं अनेक कोणों से प्रहार करते थे। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने भारत के लोक पर्व दीपावली पर प्रहार करना शुरू किया, तो उन्होंने इस उत्सव के पीछे की प्रामाणिक पौराणिक कथा का वर्णन किया जो मूर्खतापूर्ण भी थी और अश्लील भी और ऐसे उत्सवों के आर्थिक निहितार्थ को भी स्पष्ट किया और यह भी बताया कि इसमें समय, ऊर्जा और स्वास्थ्य की कितनी बर्बादी होती है, जिनका सदुपयोग इस धरती पर जीवन की बेहतरी के लिए किया जाना चाहिए था।

वह किसी भी मकसद के लिए किए जाने वाले उपवास के कट्टर विरोधी थे क्योंकि धार्मिक लोग जब कभी उपवास का प्रबंध करते तो उसका मतलब एक विशेष मकसद के लिए 'दावत उड़ाना' होता था। उदाहरण के लिए, जब धार्मिक समूह ने गौ हत्या के विरोध में उपवास का आयोजन किया, तो पेरियार ने दावत का आयोजन किया जिसमें सभी को गोमांस खिलाया गया। यह उनके कामो का ही फल था कि घृणित देवदासी प्रथा का अंत हुआ (जिसमें गरीब घरों की कमसिन कन्याओं का विवाह देवों से करा दिया जाता था और जो बाद में पुजारियों और जमींदारों की रखैलें बन जाती थीं और उसके बाद वेश्या हो जाती थीं)

जब डॉ. बी. आर. आंबेडकर ने पेरियार से कहा कि उनके साथ वह भी बौद्ध धर्म अपना लें, तो पेरियार ने उनकी बात नहीं मानी, अपितु यह कहा कि वह ऐसा नहीं करें क्योंकि हिंदू धर्म में रहते हुए ही उन्हें इसकी आलोचना का अधिकार होगा और वे जनसाधारण को शिक्षित कर सकेंगे। जनता को यह दिखाने के लिए कि देवताओं की मूर्तियों में कुछ भी दैवीय नहीं होता, उन्होंने और उनके अनुयायियों ने गजमुखी दैत्य गणेश की हजारों मूर्तियों को तोड़ डाला। यह वही गणेश थे जिन्होंने हाल ही में पूरे संसार में एक ही दिन, एक ही समय में कथित तौर पर दूध पिया था।

यहां यह याद रखना होगा कि इनमें से एक भी मूर्ति सार्वजनिक संपत्ति नहीं थी और सारी मूर्तियां पेरियार के अनुयायियों ने अपने पैसों से खरीदी थीं। अब नास्तिकों के इस नैतिक कार्य की तुलना उन लोगों के हाथों हाल में बाबरी मस्जिद के विध्वंस से कीजिए जो यह मानते और कहते हैं कि सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाते हैं। रामायण की रचना ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को महिमामंडित करने के लिए की गई थी, यह दिखाने के लिए पेरियार ने एक जुलूस का आयोजन किया जिसमें राम की मूर्ति को लगातार चप्पल–जूतों और झाड़ुओं से पीटा गया और बाद में सार्वजनिक तौर पर जला दिया गया।

पेरियार अपनी इस बात को सही सिद्ध करने के लिए सार्वजनिक बहसों का भी आयोजन करते थे कि रामायण अश्लील और पतनकारी है और इसलिए सार्वजनिक तौर पर जलाने लायक है। इन बहसों और उनके बाद जलाने की क्रिया से लोगों को इस तथाकथित धर्मग्रंथ का अश्लीलता और उसके असली रूप को समझने में मदद मिलती थी। लोगों को शिक्षित करने के अपने प्रयास में, उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी।

उनके पास प्रत्येक पर्व और प्रत्येक देवता के विषय में बताने को मौलिक किस्से थे, प्रत्येक चमत्कार के विषय में सांसारिक व्याख्याएं और प्रदर्शन थे, प्रत्येक तर्क के उत्तर में उनके पास वैध और अकाट्य प्रति–तर्क थे। यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है, तो यह तो ईश्वर को मनुष्य की इच्छाओं के अनुसार कार्य करना चाहिए या फिर उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मनुष्य उसकी इच्छा के विरूद्ध कोई इच्छा नहीं करे। जो आस्तिक प्रतिदिन अपनी दाढ़ी बनाता है जो ईश्वर वहां प्रतिदिन बाल उगने को कहता है, यह एक मूर्खापूर्ण द्वंद्व है और इससे उन दोनों का ही भंडाफोड़ होता है।

जब तक संसार में ब्राह्मण शब्द है, तब तक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से घृणित शूद्र शब्द रहेगा। इसलिए पेरियार अपने अनुयायियों से कहते थे कि होटलों और लॉज में लगे सभी नाम पट्टों से ब्राह्मण शब्द मिटा दें। उन्होंने गैर–ब्राह्मणों के साथ मंदिरों के गर्भ गृह में घुसने के लिए एक आंदोलन की भी योजना बनाई जिससे मंदिरों में ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त हो और शूद्र होने का अपमान भी मिटे।

जब भारत सरकार ने जनता के साथ धोखा करते हुए धर्म निरपेक्ष शब्द का अर्थ सभी धर्मों में समान आस्था कर दिया, तो पेरियार ने कहा कि तब तो कुआंरी कन्या का अर्थ होगा ऐसी लड़की जो सभी पुरूषों को समान अवसर दे। जब उनसे आग पर चलने के चमत्कार के बारे में कहा गया, तो उन्होंने सवाल किया कि चमत्कार की शक्ति से लोग आग पर खड़े क्यों नहीं हो जाते, या वे एक दहकते लोहे की छड़ को पकड़कर अपनी शक्ति क्यों नही दिखाते।

आस्तिकों को लज्जित और शिक्षित करने के लिए, पेरियार ने अपने अनुयायियों से कहा कि वे उन विश्वासियों से भी अधिक दूरी तक चलकर दिखाएं और यह कहते जाएं कि कोई ईश्वर है ही नहीं। जब उनसे साई बाबा के बारे में सवाल किया गया कि वह कैसे हवा में से चीजें पैदा कर देते हैं तो उन्होंने कहा कि ऐसी सभी चीजें इतनी छोटी होती हैं कि उन्हें आसानी से हथेली में छिपाया जा सकता है और इस धर्मगुरू को चुनौती दी कि वह कद्दू का हाथी पैदा करके दिखाएं।

जो लोग राहुकालम् और यमकंडम् की अशुभ घड़ियों से चिंतित होते थे, उनसे पेरियार का सवाल होता था कि क्या कोई व्यक्ति केवल इस कारण से अपनी ट्रेन छोड़ देगा कि यह राहुकाल में स्टेशन से रवाना होती है, या कोई व्यक्ति किसी अशुभ घड़ी में जज के बुलाने पर कचहरी में

गवाही के लिए हाजिर होने से रूक जाएगा। ज्योतिषियों से उनका सवाल था कि वे किसी अंतरिक्ष यान में जन्म लेने वाले बच्चे के भविष्य की गणना कैसे करेंगे, क्योंकि तब उन्हें पृथ्वी ग्रह का भी ध्यान रखना होगा।

भौतिक शरीर से अलग कोई आत्मा नहीं होती, यह समझाने के लिए उन्होंने भौतिकवाद पर एक पुस्तक लिखी और साधारण जन को इस सत्य के बारे में समझाया। उनका कहना था कि यदि कोई यह विश्वास करता है कि शारीरिक क्रियाओं को समझाने के लिए आत्मा की अवधारणा की आवश्यकता होती है, तो एक घड़ी, मोटर और रेडियो को भी काम करने के लिए आत्मा की आवश्यकता होगी।

आत्मा के सिद्धांत को एक ही बार में धराशायी करके, पेरियार ने आत्मा के साथ जुड़े पूर्वजन्म, अगला जन्म, ज्योतिष, अंतिम संस्कार, स्वर्ग और नर्क और देवता और राक्षस जैसे सभी अंधविश्वासों पर घातक प्रहार किया। उन्होंने एक ओर स्वर्ग-नर्क और दूसरी और पूनर्जन्म होने के घोर अंतर्विरोध को लोगों के समक्ष उजागर किया। उनका सवाल था कि यदि पुनर्जन्म का कारण पूर्व जन्म के अच्छे और बुरे कर्म होते हैं, तो फिर स्वर्ग और नर्क किसलिए हैं? यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, तो फिर मंदिर में ताला लगाने की क्या जरूरत है?

यदि ईश्वर प्रेम का साक्षात रूप है, तो फिर उसके हाथों में इतने सारे हथियार क्यों रहते हैं? एक प्रेम करने वाला ईश्वर दूसरों को नर्क में कष्ट उठाते कैसे सहन कर सकता है? यदि हमारे देश में सरस्वती वास्तव में शिक्षा की देवी है जहां कागज के टुकड़ों को भी पवित्र माना जाता है, जो सरस्वती अर्थात कागज को गुदा साफ करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, वहां इतने अधिक पढ़े-लिखे लोग क्यों हैं?

यदि, जैसा कि विश्वास किया जाता है, सरस्वती का निवास ब्रह्मा के मुंह में है, तो वह मल-मूत्र त्याग कहां करती है? जब हमारे देश में नियम से आयुध (हथियारों की) पूजा होती है, तो मुसलमानों और अंग्रेजों ने इसे इतनी शताब्दियों तक गुलाम कैसे बनाए रखा? विष्णु के सारे अवतार अकेले भारत में ही क्यों हुए? कोई ऐसे ईश्वर की पूजा क्यों करे जो अपने पास केवल ब्राह्मणों को आने देता है और केवल संस्कृत भाषा सुनता है?

प्रत्येक व्यक्ति मंदिरों के गर्भगृह में प्रवेश क्यों नहीं कर सकता जहां मक्खी, मच्छर, चूहे और चमगादड़ आजादी से घूमती-फिरती हैं? जब ब्राह्मणों की गलियों में कुत्ते और सुअर घूम सकते हैं, तो अछूत क्यों नहीं?

यदि ब्राह्मण मंत्रों का जाप करके एक पत्थर को भगवान बना सकता है, तो उसी मंत्र से किसी अछूत को भगवान क्यों नहीं बनाया जा सकता? यदि अग्नि एक देवता है तो आग लग जाने पर लोग आग-आग क्यों चिल्लाते हैं? यदि सच्चा ईश्वर का उपहार होता है, तो क्या कोई पुरूष ऐसी स्थिति में अपनी पत्नी से जन्मे बच्चे को अपना लेगा जबकि उसका अपनी पत्नी से पहले सहवास ही नहीं हुआ?

इन और ऐसे ही अन्य विचारोत्तेजक प्रश्नों ने लोगों को सोचने को बाध्य कर दिया था। उनकी आसान भाषा, व्यावहारिक उदाहरणों, निष्ठापूर्ण प्रयास, साहस और सत्यता ने जल्दी ही लोगों का मन जीत लिया। शुरू-शुरू में तो धार्मिक पाखंडियों ने उन्हें सताया, किंतु जल्दी ही उन्हें अत्यधिक धार्मिक व्यक्तियों का भी सहयोग मिलने लगा। उनकी विनम्रता तो किसी भी आंदोलन के किसी भी नेता के लिए अनुकरणीय है। उनका चरित्र इतना निष्कलंक था कि ताकतवर शत्रु भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाए और लोग उन्हें पूजनीय मानने लगे।

उन्हें देखने मात्र से ही उनके प्रति सम्मान का भाव जाग्रत होता था और लोगों ने उनके प्रति अपना प्रेम और आदर व्यक्त करने के लिए उनकी सभा में उन्हें दान देना शुरू कर दिया। अपने प्रिय आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिए एक न्यास (ट्रस्ट) बनाने की खातिर, वह जितना बचा सकते थे उन्होंने बचाया; यहां तक कि उन्हें कंजूस भी कहा गया।

मानवता के प्रति उनकी सेवा का सम्मान करते हुए, यूनेस्को ने 1970 में उनका अभिनंदन किया और उन्हें एक प्रशस्ति पत्र दिया जिसमें लिखा था : पेरियार, नए युग के भविष्यदृष्टा, दक्षिण पूर्व एशिया के सुकरात, सुधार आंदोलन के जनक और अज्ञान, अंधविश्वासों, अर्थहीन प्रथाओं और आचरणों के कट्टर शत्रु।

सामार – पेरियार महान
पृष्ठ सं. 106 से 110
शीलप्रिय बौद्ध

रामराज्य की कल्पना अशोक के धम्म राज्य से।

संस्कृत रामायण कर्ताओं को श्रीलंका के बारे में बिल्कुल जानकारी नहीं थी। इतना ही नहीं तो लंका से जाकर वापस आया कोई आदमी उनको नहीं मिला इन लेखकों को केवल इतना ही दिखाना था कि आठ सौ मिल समुद्र पार कर वैदिक लोग बौद्धों के पहले ही लंका गये थे। इस एक ही उद्देश से प्रेरित इन ब्राह्मणों की सोच ऐसी थी, जो वनस्पति उत्तर भारत में मिलती है, वही लंका में भी होगी। जो भाषा उत्तर भारत में बोली जाती है, वही लंका में बोली जाती होगी। इसके चलते दो हजार मिल के अंदर ही रामायण घटीत हुआ। यह बतानेवाले इन लेखको के रामायण के पात्रो को कभी भाषा की अडचन नहीं आयी। बंदर, गृध, रीस, मानव, यक्ष, और राक्षसनी कि भाषा संस्कृत। जो की वह किसी की भी मातृभाषा नहीं थी फिर भी सभी की है ऐसा आभास निर्माण किया।

बुद्ध के धम्म से ब्राह्मण धर्म पुराना है इसका विस्तार समुद्र पार द्वीपों पर हुआ था ऐसी धोखेबाजी करके स्थानिय जनतापर प्रभाव डालने के लिए झूठा रामायण रचा गया। अशोक ने लंका में धम्म प्रचारक भेजने से पहले वैदिकों ने वहाँ लष्करी विजय प्राप्त किया था। ऐसी डींगे हाकने के लिए यह संस्कृत रामायण लिखा। अशोक के जन कल्याणकारी राजसत्ता की प्रशंसा सर्वत्र हो रही थी। अशोक अपनी प्रजा को संतान मानता था। संतान समझकर प्रजा की देखभाल करने से यह काफी लोकप्रिय हुआ था। (केवल ब्राह्मणों को ही अशोक नहीं चाहिए था।) बुद्ध के धम्म का पालन करके लोकप्रिय हुए अशोक से ज्यादा वैदिकों के धर्म का पालन करने वाला राम भी इतना लोकप्रिय हुआ था कि, राम ने जलसमाधी लेते ही उसके अयोध्या के सभी प्रजा ने नदी में जान दी, ऐसी घटना घटी ऐसा लिखने से अशोक के राजसत्ता के लोकप्रियता को पर्याय के तौर ब्राह्मणों ने 'रामराज्य' का चित्र रेखांकित किया। मेरे इस प्रतिपादन को सपोट डॉ. रोमीला थापर ने लिखा ग्रंथ का जो अनुवाद डॉ. शरावती शिरगांवकर ने किया है। उनके आगे दिये गये विधान से पता चलता है – 'ऐसा वैभव एवं पवित्रता का काल मतलब आदर्श राज्य यह कल्पना इस समय (अशोक) के लोगों के मन में हमेशा थी। इसमें कोई दोराय नहीं। आगे के समय में रामराजा के कल्पना में वह संपूर्णता से स्पष्ट हुई। (मूल अंग्रेजी ग्रंथ का नाम Ashok And The Decline of Moury's)

मौर्य राजकर्ताओं की हत्या करके ब्राह्मणों ने साम्राज्य हथिया लिया, तब मौर्या को नालायक ठहराने की कोशिश ब्राह्मणों ने की। यह नालायकपन नैतिकता के बारे में सिद्ध करना ब्राह्मणों को संभव नहीं था। इसलिए मौर्या को पाखंडी करार देकर उनकी बदनामी की मुहिम ब्राह्मणों ने निकाली। वेद और यज्ञ को महत्व न देने वाला, तो पाखंडी ऐसी व्याख्या ब्राह्मणों ने की।

यज्ञ में इतना सामर्थ्य था की, बांझ महिला को भी यज्ञ के प्रभाव से बच्चा पैदा होता है। यक लोगों को बताने के लिए संस्कृत रामायण में दशरथ के पुत्र कामेष्ठी यज्ञ का झूठा वर्णन किया गया। इसी प्रकार के यज्ञ महानता की झूठे वर्णन लिखकर महाभारत और अन्य पुराण उस में जोडा गया। असंभव बातें संभव करने वाले दैवी शक्ति का यज्ञ अशोक ने नकारे वैसे ही मौर्य वंश में कोई भी राजा ने इसे स्वीकारा नहीं था। ब्राह्मण लोगों के अलावा कोई भी मूलनिवासी वेदों को एवं यज्ञ को भीख भी नहीं देता था। अंधविश्वासी लोग, ब्राह्मणों ने शिफारीश करने के बाद यज्ञ करा लेते थे। पर वे वैदिक धर्म का स्वीकार किया इसलिए नहीं तो भला हो, अपने उपर का संकट टले, इच्छा पूर्ती होने इन अपदायों से। अशोक ने बली देने पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून बनाया था। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव यज्ञ में दिये जाने वाले पशुबली देने वालें ब्राह्मणों को पड़ा वैसे ही वामाचार करने वाले संप्रदाय पर पड़ा पर वामाचारी या तांत्रिक संप्रदाय ने अशोक को पाखंडी नहीं ठहराया। ब्राह्मणों ने मात्र अश्वासूर कहकर गालियाँ दी। (महिषासूर, नरकासूर इस चाल पर अशोक का अश्वासूर) असूर यानी राक्षस ऐसा भी अर्थ मानकर अशोक को अश्वासूर कहा जो पुराणकारों ने गाली की तरह थी। रावण को तो सीधा-सीधा 'राक्षस' गाली दी और बुद्ध को 'चोर' गाली दी। बुद्ध को चोर कौन कहता है तो स्वंय राम।

पुराणों के कल्पना के अनुसार राम सातवा अवतार, यह राम त्रेता नाम के ब्राह्मण कल्पना के युग में हुआ। बुद्ध को पुराण ने नौवा अवतार माना। वह ब्राह्मण कल्पना के कली युग का, त्रेता युग का और कली युग के सारे साल मायनस किये तो त्रेता और कली के बीच का अंतर द्वापर युग के आठ लाख चौसष्ट हजार वर्ष बाकी रहते हैं। राम बुद्ध के पहले कम से कम आठ लाख चौसष्ट हजार वर्ष पूर्व हुआ ऐसे कहा जाये तो उसे फिर बुद्ध का अर्थ चोर यह कैसे पता चला?

यहाँ पर कोई कहेगा राम देव का अवतार था, इसलिए कलीयुग में उसके बाद दस, बारह लाख वर्षों से बुद्ध जन्म लेगें यह बात राम को पता थी, तो फिर आश्रम में सीता नहीं! यह देखकर राम हैरान क्यों हुआ? उसे रावण भगा ले गया और लंका में लाकर रख दिया यह बात उसके गुजरते दिनों के जीवन की अत्यंत व्याकूल करने वाली घटना उसे क्यों पता नहीं चली? इस प्रश्न के उत्तर यही है की, रामायण बुद्ध के बाद लिखा गया। बुद्ध के बाद ईसा पूर्व 187 तक जैन, आजीवक और बौद्ध नृपती की राजसत्ता थी और ब्राह्मणों की एक भी राजसत्ता नहीं थी। तब बुद्ध को गालियाँ देने का ढ़ाँढ़स ब्राह्मणों को क्यों नहीं हुआ?

ईसा पूर्व 187 में बौद्ध नृपती बृहदरथ मौर्य की पुष्यमित्र और अग्निमित्र शुंग इन पिता पुत्रों ने हत्या करके साम्राज्य पर कब्जा करते ही ब्राह्मणों ने बुद्ध को गाली गलौच देने का ढ़ाँढस हुआ। इसलिए शुंग काल में रचे इस रामायण का राम कहता है "यथैव चोर तथैव बुद्ध" (जैसा चोर वैसे बुद्ध) कहने का तात्पर्य यह है कि, बुद्ध धम्म और अशोक का धम्म राज्य इनका महत्व नष्ट करने के लिए इस संस्कृत रामायण की रचना की गयी। ऐसी रचना करने के लिए अनुकूल वातावरण ईसा पूर्व दूसरी सदी और पहली का समय ब्राह्मण राजसत्ता थी बाद में ईसा पूर्व चौथी सदी के बाद गुप्त वंश राजसत्ता में रामायण अधिक ब्राह्मण समर्थक की बना।

सामार – प्रदूषित रामायण
पृष्ठ सं. 61 से 63
श्रीकांत शेटये

परिच्छेद : चार (वराह और हिरण्यगर्भ के संबंध में)

धोंडीराव : कच्छ की मृत्यु के बाद द्विजों का मुखिया कौन हुआ?

ज्योतिराव : वराह।

धोंडीवार : भागवत आदि इतिहासकारों ने यह लिखकर रखा है कि वराह का जन्म सुअर से हुआ है। इसमें आपकी क्या राय है?

ज्योतिराव : वास्तव में सही बात यह है कि मनुष्य और सूअर में किसी भी दृष्टि से कोई समानता नहीं है। अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए और तुम्हें अच्छी तरह समझ में आ जाए, इसलिए यहां उदाहरण के रूप में सिर्फ एक ही बात कहना चाहता हूं कि वे अपने बच्चों को जन्म देने के बाद उनसे कैसा व्यवहार करते हैं, हमें सिर्फ यही देखना है। मनुष्य जाति की नारी अपने बच्चों को जन्म देते ही वह अपने बच्चे को किसी भी तरह परेशान नहीं करती और उसे बड़े लाड–प्यार से पालती–पोसती है। लेकिन सुअरी कुतिया की तरह अपने पैदा किए पहले बच्चे को एकदम खा जाती है। उसके बाद दूसरे बच्चे को पैदा करती है। इससे यह सिद्ध होता है कि वराह की सुअरी माता ने सबसे पहले अपने सुअर बच्चे को खाकर बाद में उस मानव सुअर को पैदा किया होगा। किंतु भागवत आदि ग्रंथकारों के अनुसार, वराह यदि आदिनारायण का अवतार है, तो उसकी सर्वज्ञता और समानदृष्टि को दाग लगा या नहीं? क्योंकि वराह आदिनारायण का अवतार होने की वजह से, उसको पैदा करने वाली सुअरी को उसके बड़े सुअर भाई को मारकर नहीं खाना चाहिए था। उसने इसके पहले ही कुछ प्रबंध करके क्यों नहीं रखा था? हाय! यह पद्मा सुअरी वराह आदिनारायण की मां ही तो है न! और उसने इस तरह से अपने नन्हे–मुन्ने अबोध बालक की हत्या क्यों की? 'बालहत्या' शब्द का अर्थ सिर्फ बच्चों को जान से मारना ही होता है, फिर वह बच्चा किसी का भी क्यों न हो। किंतु इसने अपने पैदा किए हुए मासूम बच्चे की ही हत्या करके खा लिया। इस तरह के के अन्याय का अच्छा अर्थ बोध हो, ऐसा शब्द किसी शब्दकोश में खोजने से भी नहीं मिलेगा। इसको यदि डाकिनी (डायन) कहा जाए, तो डाकिनी भी अपने बच्चों को नहीं खाती, यह एक पुरानी कहावत है। उस वराह की पद्मा माता को इस तरह का अघोर कर्म करने की वजह से नरक की यातनाएं भोगने से मुक्ति मिले, इसलिए उसने ऐसा पापमुक्ति का कर्म किया, इसका कहीं कोई जिक्र भी नहीं मिलता, इसका हमें बड़ा खेद होता है।

धोंडीराव : वराह की सुअरी माता का नाम यदि पद्मा था, तो इससे यह सिद्ध होता है कि उसके सुअर पति का भी कुछ न कुछ नाम होना ही चाहिए?

ज्योतिराव : पद्मा सुअरी के पति का नाम ब्रह्मा था।

धोंडीराव : इससे यही समझ में आता है कि प्राचीन काल में जानवर मनुष्यों की तरह आपस में एक दूसरे को ब्रह्मा, नारद और मनु जैसे नाम देते थे। उनके नाम इन गपोड़ी ग्रंथकारों को कैसे समझ में आए होंगे? दूसरी बात यह है कि पद्मा सुअरी ने वराह को उसके बचपन में अपने स्तन से दूध पिलाया ही होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। किंतु बाद में उसके कुछ बड़ा होने पर गांव के खंडहरों में बहुत ही कोमल फूल–पौधों का चारा चरने की उसे आदत पड़ गई होगी कि नहीं, यह तो वही वराह आदिनारायण ही जाने। इस तरह से उनके (धर्म) ग्रंथों में कई तरह के महत्वपूर्ण सवालों के जवाब नहीं मिलते। इसलिए मुझे लगता है कि धर्मग्रंथों में जो कुछ लिखा मिलता है, वह सब झूठ है कि वराह सुअरी से पैदा हुआ है और इस तरह की झूठमूठ की बातें शास्त्रों में लिखते समय उन ग्रंथकारों को तनिक लज्जा भी नहीं आई होगी?

ज्योतिराव : यह कैसी बेतुकी बात है कि तुम्हारे जैसे ही लोग उस तरह के झूठे ग्रंथों की शिक्षा की वजह से ब्राह्मण–पुरोहितों और उनकी संतानों के पांवों को धोकर पीते हैं। अब तुम ही बताओ, इसमें तुम निर्लज्ज हो या वे?

धोंडीराव : खैर, अब इन सब बातों को छोड़ दीजिए। आपके ही कहने के अनुसार, उस मुखिया का नाम वराह कैसे पड़ा गया?

ज्योतिराव : क्योंकि उसका स्वभाव, उसका आचार–व्यवहार, उसका रहन–सहन बहुत ही गंदा था और वह जहां भी जाता था, वहीं जंगली सुअर की तरह झपट्टा मारकर अपना कार्य सिद्ध कर लेता था। इसी वजह से महाप्रतापी हिरण्यगर्भ और हिरण्यकश्यप नाम के जो दो महाप्रतापी क्षत्रियों ने उसका नाम अपनी प्रतिकार की भावना व्यक्त करने के लिए सुअर अर्थात वराह रखा। इससे वह और बौखला गया होगा और उसने अपने मन में उनके प्रति प्रतिशोध की भावना रखते हुए उनके प्रदेशों पर बार–बार हमले करके, वहां के क्षेत्रवासियों को कष्ट देकर, अंत में उसने एक युद्ध में (हिरण्याक्ष) हिरण्यगर्भ को मार डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि देश के सभी क्षेत्रपतियों में घबराहट पैदा हो गई और वे कुछ लड़खड़ाने लगे और इसी दौरान वराह मर गया।

साभार – गुलामगीरी
पृष्ठ सं. 37 से 38
ज्योतिराव फुले, अनुवादक डॉ. विमल कीर्ति

होलिका दहन

फागुन महीने की पूर्णिमा को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस अवसर पर लकड़ी घास फूँस का बड़ा ढेर लगाकर एक भड्डरी या ब्राह्मण के द्वारा आग लगाई जाती है। यज्ञ भी इसी दिन किया जाता है। बहुत कीमती पकवान बनाए जाते हैं। रंग गुलाल की रंगाई होती है शराब भंग पी जाती है और स्त्रियों के साथ नाँच रंग होता है। होली रात्रि में सूर्योदय से पहले जलाई जाती है। होली कथा भविष्य पुराण में आई है। नारद राजा युधिष्ठर को होली की कथा सुनाते हैं कि हिरण्य कश्यप की बहन और प्रहलाद की बुआ होलिका को आग में डालकर जला दिया गया था इसी दिन होली जलाई जाती है। राक्षस की बहिन की हत्या की खुशी में नाँच रंग अबीर गुलाल डालकर होली मनाई जाती है। कथा में आया है कि हिरण्य कश्यप राक्षसों का राजा था और आर्यों का घोर विरोधी था। आर्य इन देवताओं के नाम पर निरपराध पशुओं की बलि देकर हिंसा करते थे। उसने अपने राज्य में पशु बलि बन्द करा दी और हत्यारे आर्य ब्राह्मणों को जेल में डाल दिया। ब्रह्मा विष्णु की पूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया और इनका नाम लेने और ब्राह्मण के पाखण्ड पर दण्ड देने लगा। इसके भय से ब्राह्मण और उनके देव विष्णु ने मिलकर हिरण्य कश्यप के वध करने की योजना बनाई और कपटी वेष बनाकर विष्णु ने नकली शेर की खाल ओढ़कर खम्भे से छिपकर उस अनार्य राजा को मार डाला। प्रहलाद जो उनका लड़का था उसे बरगला कर अपनी ओर मिला लिया। कुटुम्ब द्रौही प्रहलाद अपनी बुआ को धोखा देकर ले गया और आर्यों द्वारा उसे आग में जलवा दिया और स्वयं बच गया।

विधि विधान : फागुन पूर्णिमा के व्यतीत होने पर सुबह पहर में होली जलाई जाती है। उससे एक पक्ष पूर्व होली रखी जाती है लकड़ी कण्डे इकट्ठे किए जाते हैं और पूर्णमासी को जला दिए जाते हैं। परिवा के दिन नाच रंग होता है अबीर गुलाल से होली खेलते हैं घरों में अच्छे पकवान बनाते हैं और स्त्री पुरूष सभी नशे में धुत होकर रिश्ते नाते बंधन टूट जाता है लज्जा खूटी पर रख दी जाती है और खुलकर हँसी मजाक होता है ससुर बहू से बहू ससुर को देवर भाभी को जेठ छोटी भाभी से खूब विनोद मनाते हैं। हिन्दुओं की घोर अश्लीलता का यह त्यौहार है अगर इस अवसर पर कोई हिन्दू परदा को रिश्ते वाल स्त्री से भी भोग कर बैठे तो कोई दण्ड की व्यवस्था नहीं है। परिवा के दिन हिन्दू होली की परिक्रमा कर अक्षत डालते हैं और ढोलक मंजीरों के साथ गाते बजाते हैं। पूर्णिमा के दिन रात्रि में सब लोक इकट्ठे होते हैं और होली के पास उत्तर या पूरब की ओर मुँह करके बैठते हैं फिर एक ब्राह्मण द्वारा होली में आग लगाई जाती है कुँवारी हिन्दू कन्याएँ रात में ही जाती हैं। थाली में भोजन और दान ले जाती हैं और होली का पूजन कर वह भोजन दान ब्राह्मण को देती है। गेहूँ, जौ, चना की बालें भूनी जाती हैं। ब्राह्मणों को दान दिया जाता है। राक्षस दमन की खुशी में सभी हिन्दू एक – दूसरे के गले मिलते हैं। गाँजा भांग शराब छक कर पिए जाते हैं।

उद्देश्य एवं रहस्य : यह आर्य और अनार्य के संघर्ष की एक खून भरी कहानी है। हिरण्य कश्यप अनार्य आदिवासी राजा था जिनके वंशज आज शूद्र हैं राजा कश्यप को शेर की खाल ओढ़कर मुँह छिपाकर मारा था ताकि पहचाने न जा सके और कश्यप का लड़का प्रहलाद भी न जान सके कि जो लोग उससे मिल हैं उन्हीं ने उसके पिता की हत्या कर दी है। नरसिंह अवतार की कहानी महज शूद्रों के विद्रोह को रोकने की नियत से गढ़ी गई है जो मनगढ़ंत है। राजा हिरण्य कश्यप के राज्यकाल के समय की समस्त पुस्तके और साहित्य को जला डाला गया बाद में प्रहलाद को भी मार डाला गया। जिस समय आर्यों ने यह विद्रोह अनार्य राजा के विरूद्ध कथा और शूद्र राजा को मार डाला तो अनार्य शूद्र जाति की स्त्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया और उसी की परम्परा में भी समाज के सवर्ण ठेकेदार दलाल गरीबों दलितों की माँ बहनों की इज्जत के साथ खेलते और होली के हुड़दंग के नाम पर इन्हे अपनी हविश का शिकार बनाते हैं। हर साल पर्व के नाम पर रंग, गुलाल लेकर इनके घरों में इनकी स्त्रियों के पास पहुँच जाते हैं। कितनी विडम्बना है कि सैकड़ों वर्षों से इस दलित शूद्र जाति ने हिन्दुओं के इस अत्याचार को हँसकर स्वीकारा है। उसने यह भी न सोचा कि यह उसी के राजा और उसी के वंश के विनाश के यादगार की कहानी होली का पर्व है और आज के दिन सवर्ण हिन्दुओं को जो महिलाओं से मिलने की छूट मिल जाती है उसी के फलस्वरूप वह हिन्दू उस शूद्र की स्त्रियों के साथ सालों भी बलात्कार जैसे कुकर्म करता रहता है।

होली के त्यौहार पर गले मिलकर रंजिश भेद भाव मिटाने का नाटक रचा जाता है। इसका अर्थ है कि सारे वर्ष जुल्म अत्याचार हत्या लूट ये सवर्ण हिन्दू करता है। और शूद्र इन अपराधों का शिकार होता है। इस अवसर पर सवर्ण हिन्दू यह गले मिलकर अपने ऊपर किए गए कुकर्म अपराधों को भूल जाने की सलाह देता है। ताकि शूद्र उससे बदला न लें और अपनी पीड़ा भूल जाये।

इस त्यौहार पर ब्राह्मणों की पौ बारह होती है। भोजन दान हफ्तों चलता है। झोली भर–भर कर दान दिया जाता है। हाथी, घोड़ा, गाय, अन्न, सोना, चाँदी, बर्तन जो जैसा दान दे पाता है। ब्राह्मणों को दान देता है। यह ब्राह्मण की स्वार्थ पूजा का त्यौहार है बाजार से करोड़ो रूपए की घी, तेल, अबीर, गुलाल, रंग पिचकारी आदि सामग्री खरीद कर खर्च कर दी जाती है इससे गरीब पर कर्ज बढ़ता और बनियों के घर बनते हैं गरीब गरीब कर्ज लेकर खर्च करता है और वैश्य वर्ण चौगुने लाभ पर बेचता है। यह शूद्रों की बरबादी का त्यौहार है।

वास्तविकता यह है कि होली शूद्रों पर अत्याचार की यादगार है। शूद्र इसे भूल जाएँ और अपने ही राजा और राज महिला होलिका की हत्या भूलकर उन्हें ही पापी अत्याचारी समझने लगें। यह त्यौहार उसी षड़यन्त्र की कड़ी है, इस प्रकार यह त्यौहार शूद्र जाति के लिए अपमान शोषण दमन और अत्याचार की कहानी है। इसे शूद्र को नहीं मनाना चाहिए।

साभार :
हिन्दुओं के व्रत–पर्व और त्यौहार
एस. एल. सागर

अपने अंतिम बसेरा को ही आर्यों ने तीर्थ–स्थल घोषित किया

यह देखने को मिलता है कि अधिकांश प्राचीन हिन्दू तीर्थ स्थल गंगा यमुना नदी के आस–पास के क्षेत्रों में ही स्थित है। वाराणसी, इलाहाबाद, हरिद्वार, अयोध्या, काशी, प्रयाग, मथुरा आदि हिन्दुओं के प्राचीन तीर्थस्थल हैं। इनके महात्म्य का वर्णन पौराणिक कथाओं में भी बढ़–चढ़कर आया है। इतना ही नहीं, इन तीर्थस्थानों में जो पंडे होते हैं उनके पास, खास कर उत्तर भारत के हिन्दू यजमानों की कई पीढ़ी की वंशावली भी रहती है। प्रत्येक पंडा किसी निश्चित क्षेत्र के लिए अधिकृत होता है और उस क्षेत्र का यजमान उसी पंडे के पास पहुँचता है। यद्यपि आजकल पंडे दलालों का प्रयोग कर दूसरे के यजमानों को भी अपने बिछाये जाल में फँसा लेते हैं।

इस सब बिन्दुओं पर विवेचना करने से स्पष्ट पता चलता है कि ऐसा होने का संबंध आर्य ब्राह्मणों के भारत आक्रमण के बाद उनके विस्तार और विकास से है। ईसा पूर्व 2500 में आर्य ब्राह्मण ईरान से भारत की तरफ प्रस्थान कर चुके थे। अफगानिस्तान होते हुए भारत की सीमा में ये ईसा पूर्व 1500 में प्रवेश किया, अर्थात् ईरान से भारत तक पहुँचने में उन्हें 1000 वर्ष लग गये। भारत पहुँचने के 300 वर्ष बाद ईसापूर्व 1200 में वसिष्ठ, भारद्वाज और विश्वामित्र जैसे वैदिक ऋषियों ने ऋग्वेद के मंत्रों का सृजन करना प्रारम्भ कर दिया। आर्य ब्राह्मण गंगा–यमुना के मैदानी भाग तक पहुँचते–पहुँचते ऋग्वेद लगभग पूरा कर चुके थे।

यहाँ उल्लेखनीय है कि आर्य–ब्राह्मणों ने रूस के वोल्गा से गंगा तक का सफर चार चरणों में पूरा किया। अर्थात् इन्होंने चार ठहरावों का प्रयोग किया, जिसमें से एक ठहराव भारत के बाहर था और तीन ठहराव भारत के अन्दर। भारत के बाहर जिन ठहरावों का इस्तेमाल आर्य लोगों ने किया, वह था ईरान। ये यहाँ काफी काल तक रहे होंगे, क्योंकि वर्तमान भारत में अधिकांश सभ्यता संस्कृति ईरान से ही आयातित है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार ईरानी ग्रंथ जेन्द अवेस्ता और भारतीय ऋग्वेद में काफी समानता है। इसका मतलब है कि ऋग्वेद में ईरानी सभ्यता संस्कृति की ही झलक है बाद में ईरानियों ने जेन्द अवेस्ता की रचना कर वहाँ के समाज, संस्कृति और सत्ता का वर्णन किया। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ धर्मानन्द कोसाम्बी वैदिक संस्कृति को बेबीलोनियन संस्कृति की उपज मानते हैं, क्योंकि बेबीलोनियन संस्कृति सुमेरियन संस्कृति से बनी है और सुमेरियन लोगों का मूल वासस्थान मध्य एशिया है। चूँकि आर्यों का भी मूल वासस्थान मध्य एशिया ही है, अतः दोनों में काफी समानता है।

आर्य ब्राह्मण भारत के अन्दर जिन पड़ावों या ठहरावों का इस्तेमाल किये उसमें पहला पड़ाव था अफगानिस्तान, दूसरा पंजाब और तीसरा पड़ाव गंगा–यमुना का उर्वर मैदान भाग। प्रथम आर्य–अनार्य संघर्ष आर्य ब्राह्मणों के प्रथम पड़ाव अफगानिस्तान में ही ईसा पूर्व 2500 में हुआ था। वहीं पर इन्द्र (आर्यों के अधिपति) के चुनाव की परिपाटी की शुरूआत हुई। पुरहुत प्रथम इन्द्र था। आर्य ब्राह्मणों का दूसरा बसेरा पंजाब था, जहाँ पर अतिविकसित प्राक्वैदिक हड़प्पा नगर का खुदाई में पता चला है। यहाँ पर कोई प्रभावशाली आर्य समुदाय रहा होगा जिस कारण हड़प्पा का नाम ऋग्वेद में 'हरिपुरिया' के रूप में उल्लेख हुआ है। इनका भारत में तीसरा और अंतिम पड़ाव गंगा यमुना का मैदानी भाग था। इन नदियों के आस–पास के क्षेत्रों में इनका स्थायी वास हुआ, जिस कारण ये अपने पूर्व निवास स्थान (रूस के वोल्गा क्षेत्र और ईरान) की सभ्यता, संस्कृति और धर्म को इन्ही क्षेत्रों में सबसे अधिक स्थापित और प्रचारित करने में कामयाब हुए। इन स्थानों को धार्मिक महत्व से जोड़कर इसे पवित्र बना दिया गया तथा इन्हें तीर्थ के रूप में घोषित कर दिया गया। आम जनता में यह धार्मिक भावना पैदा की गई कि जीवन के रहते प्रत्येक प्राणी को कम से कम एक बार इन तीर्थों को देखना और भ्रमण करना जरूरी है, अन्यथा जीवन निरर्थक है। विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद का अंतिम मंडल आर्य ब्राह्मण अपने तीसरे पड़ाव आने तक लिख चुके थे। यही कारण है कि आर्य ब्राह्मण अपने तीसरे पड़ाव को सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व का क्षेत्र घोषित करने में सफल रहे।

जैसे–जैसे काल बीतता गया, आर्य ब्राह्मण ने यज्ञवाद के साथ नाना प्रकार के कर्मकाण्ड पद्धति का सृजन करते गये। यद्यपि वेदों में आत्मा, ईश्वर तथा मंदिर का कोई उल्लेख नहीं है, तथापि उत्तरवैदिक काल में इन सब के नाम पर ब्राह्मणों ने व्यापक व्यापार करना शुरू कर दिया था। इन्होंने अपने इस अंतिम पड़ाव को धार्मिक महत्व देकर इसका संबंध पवित्रता से जोड़ दिया तथा मोक्ष के लिए प्रत्येक हिन्दू को तीर्थ यात्रा, दान–पुण्य और चढ़ावा अनिवार्य कर दिया। गौरतलब है कि आर्यों ने उसी स्थान को तीर्थस्थल के रूप में महत्व दिया, जो उनका अन्तिम पड़ाव था, जहाँ वे स्थायी रूप से बसे। उन्होंने उस स्थान का तीर्थ के रूप में पुराण ग्रंथों में वर्णन कर उसका धार्मिक महत्व प्रदान किये। प्रयाग के संबंध में संत तुलसीदास लिखते हैं –

तीर्थ पति पुनि दीख प्रयागा। निरखत जनम कोटि अघ भागा।"

अर्थात् "प्रयाग को तीर्थों का राजा कहा जाता है, जिसके एक बार दर्शन से हजारों जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं।" आर्यों के इस धार्मिक भावना से प्रतीत होता है कि तीर्थों में प्रयाग विशेष महत्व का स्थान था। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई प्रभावशाली आर्य अधिक संख्या में प्रयाग में बसे होंगे; इसलिए शास्त्रों में इसके धार्मिक महत्त्व का खूब बखान किया गया है। आम जनता पर इसका भारी असर हुआ, यही कारण है कि दुःख से व्याकुल भारत की आम जनता बगैर परिश्रम दुःख निवारण हेतु इन जगहों पर खिंचा चला आता है और कथित परलोक में स्थान सुनिश्चित कराने हेतु इस जन्म के खून–पसीने की कमाई लुटा देता है।

आर्य ब्राह्मणों के वंशजों ने भी अपने पूर्वजों के धार्मिक धंधेबाजी को आगे बढ़ाते हुए समय–समय पर यहाँ काफी मंदिरों और मठों का निर्माण किया तथा कर्मकाण्ड आदि का बढ़ावा दिया, जो आज तक जारी है। चूँकि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए हैं, उनको श्रम नहीं करना है, केवल शिक्षा और पूजा का काम करना है, इसलिए बाद के पीढ़ियों ने गंगा–यमुना के तटीय इलाके को धार्मिकता और पवित्रता से जोड़ा तथा मुफ्त में पेटभरी का उपाय किया। गंगा का उल्लेख वेद में भी आया है, परन्तु पौराणिक ग्रंथों में तो गंगा का वर्णन बड़े ही चमत्कारी, मनोहारी और सर्वफलदायिनी गंगा मइया के रूप में आया है। आज भी प्रत्येक हिन्दू गंगाजल को पवित्र मानता है तथा उसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों में करता है। गंगाजल के प्रति हिन्दुओं में पवित्रता के भाव उत्पन्न करने में प्रकृति का भी हाथ है। यदि गंगाजल को किसी बर्तन में सालों रखा जाय तो भी उसमें जीवाणु नहीं लगते हैं, यही प्राकृतिक विशेषता है गंगाजल की, और गंगा का यही गुण आम जनता में श्रद्धा उत्पन्न करता है। परन्तु गंगा के पानी में जीवाणु क्यों नहीं लगते इसका एक वैज्ञानिक कारण है, और वह है गंगा के पानी में वैक्टीरियोफेज का होना। वैक्टीरियोफेज एक ऐसा जीवाणु है जो रोग फैलाने वाले जीवाणु को नष्ट कर देता है, जिस कारण पानी जीवाणमुक्त रहता है। गंगा की पवित्रता का यही रहस्य है। परन्तु जब वहीं गंगा जल रासायनिक प्रक्रिया (वाटर ट्रीटमेंट) द्वारा शुद्धिकरण के बाद पीने के रूप में शहर में आपूर्ति की जाती है और उस जल को किसी बर्तन में बहुत दिन तक रखा जाता है तो उसमें जीवाणु लग जाते हैं। वाटर ट्रीटमेंट के दौरान प्रयुक्त रासायनिक पदार्थ से वैक्टीरियोफेज मर जाता है जिससे जीवाणु की वृद्धि होने लगती है और पानी सड़ जाता है। पाठकगण गंगाजल की पवित्रता के इस मिथक की वास्तविकता जानकर पंडों के जाल में नहीं फँसेंगे, ऐसी आशा है।

आर्य ब्राह्मण अपने अस्तित्व और प्रभुत्व को टिकाये रखने के लिए समय–समय पर मंदिरों और तीर्थों का नवनिर्माण करते रहते हैं। इसी संदर्भ में आदिशंकराचार्य ने भारत के चारों दिशाओं में ब्राह्मणी संस्कृति के विस्तार के लिए चार धाम–केदारनाथ, कन्याकुमारी, द्वाराका और जगन्नाथपुरी स्थापित किया, जिसमें ब्राह्मण जाति के 'शंकराचार्य' नियुक्ति की परम्परा आज तक चल रही है। अक्षर धाम, अयोध्या में प्रस्तावित राम मंदिर उसी कड़ी का एक हिस्सा है।

अतः वे लोग, जो यह समझते हैं कि हरिद्वार, वाराणसी, काशी, अयोध्या, प्रयाग, जगन्नाथपुरी, द्वारका, कुंभ आदि स्थानों में घूमने और नहाने से पाप कट जायेगा, दुख से मुक्ति मिल जायेगी तथा मरने के बाद बैकुण्ठ धाम मिल जायेगा। वाराणसी में श्राद्ध करने और गया में पिंडदान करने से पितरों को स्वर्ग मिल जायेगा, उनकी यह भूल है। यदि ऐसा होता तो गंगा नदी में पाये जाने वाले मछली, मेंढक, मगर आदि तथा तीर्थस्थानों में भटकने वाले कुत्ता, बिल्ली, खच्चर को पहले स्वर्ग की प्राप्ति होती। सच्चाई यह है कि उनकी मुक्ति और उन्नति उनके स्वयं के परिश्रम और संघर्ष से ही संभव है। 4 मार्च, 1933 को बंबई में आयोजित अछूत बैठक में बाबासाहब द्वारा दिये गये सीख का हमें पूर्ण मनोयोग से अमल करना चाहिए। इस बैठक में उन्होंने कहा था कि–तुम्हें अपनी दासता स्वयं मिटानी होगी, अपनी दासता मिटाने हेतु ईश्वर अथवा अतिप्राकृतिक शक्ति पर निर्भर मत होओ। धार्मिक ग्रंथों, तीर्थस्थानों और उपवासों के प्रति तुम्हारी आस्था तुम्हें दासत्व और दरिद्रता से मुक्त नहीं कर देगा। तुम्हारे पूर्वज पीढ़ियो से ऐसा करते आ रहे हैं लेकिन तुम्हारे जीवन की दयनीयता किसी भी प्रकार कम नहीं हुई। तुम्हारा धार्मिक उपवास, तपस्या और प्रायश्चित तुम्हें भूखे मरने से नहीं बचा पाया है। अतः तुम्हें राजनीतिक शक्ति प्राप्त करनी होगी ताकि तुम अपने उद्धार के लिए कानून बना सको, अतः तुम अपना ध्यान पूजा–पाठ से हटाकर विधि निर्माणकर्ता की शक्ति प्राप्त करने में लगाओ। इसी में तुम्हारी मुक्ति निहित है। तुम्हें इसके लिए चौकन्ना, मजबूत, सुशिक्षित और स्वाभिमानी बनना पड़ेगा। वास्तव में तीर्थस्थानों का केवल भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्व है। ये स्थान आर्य आक्रमण के निशानी का प्रतीक है। मूल निवासियों के उर्वर मैदानी इलाकों पर आर्यों द्वारा कब्जा जमाने तथा उन्हें गुलाम बनाने का प्रतीक हैं। ऐसे प्रतीक स्थलों को तीर्थ मानना, उसे ईश्वरीय समझना अपनी आजादी, धन, समय और स्वामित्व का नाश करना है। मूलनिवासी दलितबहुजनों के लिए तीर्थ तो सारनाथ, लुम्बनी, कुशीनगर, बोधगया, राजगृह है जो बहुजन उद्धारक महामानव बुद्ध का जन्म और कर्मस्थली है। बुद्ध ने बहुजनों को असमानता पर आधारित ब्राह्मणवादी गर्त से निकालकर समतावादी समाज में जीने का अवसर प्रदान किया है। इनकी प्रेरणा पाकर विश्वविभूति बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर ने हमें ब्राह्मणी गुलामी से मुक्ति दिलाकर सम्मान के साथ जीने का मार्ग दिखाया। हमारे देवता भगवान बुद्ध, महावीर, कबीर, रविदास, रामास्वामी नायकर, ज्योतिबाफूले, संत गाड़गे, गौरेया बाबा, चौहरमल, क्षत्रपति शाहू जी महाराज, बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर हैं। हमें इनका स्मरण करना चाहिए तथा इनसे जुड़े, साहित्य और क्षेत्रों से संबंध रखना चाहिए। दलित–बहुजनों का इसी में कल्याण है।

साभार – आनुवांशिक शोध (D.N.A.)
एवं विदेशी आर्य ब्राह्मण
पृष्ठ सं. 61 से 65
डॉ. विजय कुमार त्रिशरण

1 मार्च उल्लास दिवस (रावण जयन्ती) पर विशेष

अगर रावण दुष्ट और क्रूर था तो देवता उसकी पूजा क्यों करते थे ?

जो रावण वेदज्ञ और यज्ञ का अनुष्ठाता था, जिसे वाल्मीकि ने महात्मा कहा है और जिस की प्रजा में वेदों और यज्ञादि का पर्याप्त प्रचार था, उसे दुष्ट और नीच क्यों समझा जाता है?

राम कथाकारों द्वारा रावण जैसे पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी के असंगत चित्रण के मूल में क्या आर्य अनार्य के भेदभाव और मनोमालिन्य की प्रवृत्ति नहीं है ?

रावण दुष्ट था या महात्मा ?

लंकेश्वर रावण पुण्यात्मा और महापुरूष था। रामायण में वाल्मीकि ने उसे 'महात्मा' कहा है। जो लोग रावण को रामलीला में अपमानजनक विशेषणों से स्मरण करते हैं वे वास्तव में रावण के चरित्र को नहीं जानते. जिसे वाल्मीकि ने 'महात्मा' कहा, उसे 'नीच' और 'दुष्ट' कहना केवल दुराग्रह है। जो लोग अज्ञान के कारण पक्षपातपूर्ण दृष्टि से रावण की निंदा करते हैं, वे वाल्मीकि रामायण में सुंदरकांड के ये श्लोक पढ़े :

महात्मनो महद्वेश्म् महारत्न परिच्छदम्।
महारत्न समाकीर्ण ददर्श स. महाकपिः।
–वाल्मीकि रामायण, 6/13–14
सर्व कामैरुतांच पानभूमिं महातमनः
–वाल्मीकि रामायण, 11/12

प्रातःकाल का सुहावना समय है, हनुमान सीता जी की खोज में व्यस्त है। महावीर ने हर राक्षस के घर वेदमंत्रों की ध्वनि सुनीः

षंडगवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषंश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/12

रावण के महलों में कभी कोई नीच काम नहीं किया जाता था, सदा वेद प्रतिपादित काम किए जाते थे. इसलिए वे देवता, जिन्हें लोग पूजते हैं, रावण के घर को पूजते थे। देखिए :

गृहाणि नानावसुराजतानि देवासरैश्चापि
सुपूजितानि।
सर्वेश्च दोषैः परिवर्जितानि कपिर्ददर्श
स्वबलार्जितानि।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/127/3

यदि कोई यह कहे कि देवता, रावण को महान होने के कारण नहीं बल्कि भयभीत हो कर पूजते थे, क्योंकि रावण ने अपने अपने बल से देवताओं को जीत लिया था, तो यह जान लेना चाहिए कि ऐसा करने से देवों की दुर्बलता और कायरता ही प्रकट होती है. जो देवता रावण के भय से उस की पूजा करते थे, ये देवता कैसे ! लोग देवताओं से आशा करते हैं कि उन्हें वे दुष्टो से बचाएं। पर जब रावण से थरथर कांपते थे और उस की पूजा करते थे, तब भला वे दुष्टों से कैसे बचा सकते हें ?

वास्तव में बात यह है कि रावण के चरित्र की श्रेष्ठता और उस के पवित्र आचरण तथा महान कार्यों को देख कर ही देवता उस की पूजा करते थे।

लंका को देख कर हनुमान ने आश्चर्य से कहा :

स्वर्गोऽय देवलोकाऽयमिंद्रस्येयं
पुरी भवते।
सिद्धिर्वेयं पराहि स्यादित्मन्यत मारुतीः।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/31

यदि रावण निर्दयी या दुष्ट होता तो उस के समकालीन हनुमान उस के पाप आचरण से परिचित होते। यदि परिचित थे तो फिर निर्दयी दुष्ट राजा की नगरी को उन्होने स्वर्ग, देवलोक व इंद्रलोक क्यों कहा ? जाहिर है कि रावण एक कुशल प्रशासक था। तभी हनुमान ने उस की राजधानी की भरपूर प्रशंसा की।

रावण के आचरण पर सीताहरण का कलंक लगाया जाता है। रावण ने सीता का हरण किया, यह सच है। पर सीता हरण के समय उस के मन में काम वासना नहीं थी। उस ने काम वासना से नहीं बल्कि बदला लेने की भावना से सीताहरण किया था।

रावण ने राम वनवास के चौदहवें वर्ष के आरंभ में सीताहरण किया और वह भी बहन के नाक कान कट जाने के बाद। यदि सीताहरण में रावण की काम वासना मूल कारण थी तो वह पहले तेरह वर्ष कहां रही ? क्या वृहन्नला (अर्जुन) के समान रावण को भी नपुंकस रहने का शाप मिला था ? स्पष्ट है कि सीताहरण का मूल कारण बदले की भावना थी, काम वासना नहीं।

रावण संयमी और सदाचारी था, कामी नहीं। वाल्मीकि कहते हैं :

न तत्र काश्चित्प्रमदाः प्रसह्य वीर्योपपन्नेन
गुणेन लब्धाः।
न चान्यकामापि न चान्यपूर्ण बिना बराहाँ
जनकात्मजांताम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/10

रावण के महलो में अन्यकामा (और को चाहने वाली) कन्या तथा अन्यपूर्वा (विवाहित) स्त्री न थी। यदि वह चाहता तो बलपूर्वक अन्यकामा कन्याओं को तथा अन्यपूर्वा स्त्रियों को अपने महलों में रख सकता था। लेकिन इसे वह अनुचित समझता था। वह पापभीरु था। यदि उस ने कभी परस्त्री की ओर आंख उठाई होती तो वाल्मीकि उसे सदाचार का प्रशंसापत्र ने देते। उत्तरकांड़ वाली कथा कपोलकल्पित है।

उत्तकांड वाल्मीकि ने नहीं लिखा था। यदि उन्होंने लिखा होता तो क्या वह रावण द्वारा वेदवती पर किए गए अत्याचार से परिचित न थे ! यदि थे तो उन्होंने रावण को प्रशंसापत्र क्यों दिया ? अतः उत्तरकांड वाल्मीकि कृत नहीं है, बल्कि बाद में किसी ने जोड़ दिया है।

देखना यह है कि पहल किस ने की– राम ने या रावण ने। पहले राम ने शूर्पणखा के नाक कान काटवा दिए, फिर रावण ने सीताहरण किया। पहले राम ने हाथ उठाया, फिर रावण ने। आप कहेंगे की शूर्पणखा भगवान राम के पास गई और उन्हें तंग करने लगी, इसीलिए उन्होंने नाक कान काट दिए।

यह माना जा सकता है कि शूर्पणखा ने राम विवाह के लिए प्रार्थना की, जो सर्वथा न्यायासंगत थी। उत्तर में राम ने विवाहित होने के कारण अपनी विवश्ता प्रकट कर के कहा कि लक्ष्मण अविवाहित है, उस के पास जाओं, पर लक्ष्मण ने उसे राम के पास भेज दिया। और राम ने फिर लक्ष्मण के पास। इस तरह वे दोनों वीर एक स्त्री का उपहास करते रहे।

क्या यह सत्य है कि लक्ष्मण अविवाहित थे? यदि नहीं तो राम ने एक स्त्री से झूठ बोलने में संकोच क्यों नहीं किया। राम ने यह जानते हुए भी कि लक्ष्मण विवाहित हैं। शूर्पणखा को उस के पास क्यों भेजा। मर्यादा पुरुषोत्तम की महानता इस में थी कि वह शूर्पणखा से स्पष्ट कह देते कि हम दोनों भाई विवाहित हैं। हम विवाह नहीं करेंगे। आप चली जाएं। किंतु उन्होंने सचाई को छिपा कर एक स्त्री से अनुचित उपहास किया। फिर राम ने संकेत कर के लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक कान कटवा दिए।

यदि कोई कहे कि शूर्पणखा सीता को खाने दौड़ी थी, इसलिए राम ने उस के कान नाक कटवा लिए, तो हम पूछते हैं कि इस से पहले शूर्पणखा ने कितने स्त्रीपुरुषों को खाया था ? क्या इस का रामायण में कहीं उल्लेख है। यदि नहीं तो राम को यह भय क्यों व्यापा. क्या लक्ष्मण द्वारा नाक कान कटवाने के अतिरिक्त राम का सीता के बचाव का और कोई उपाय न सूझा। क्या नाक कान कट जाने पर शूर्पणखा सीता को नहीं खा सकती थी।

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बड़ी सुगमता से इस परिणाम पर पहुंच सकता है कि शूर्पणखा सीता को खाना नहीं चाहती थी। उस ने केवल धमकी दी थी। आजकल भी लोग एक दूसरे को कच्चा खाने की धमकी देते हैं। मगर आज तक किसी ने किसी को कच्चा खाते नहीं देखा।

शूर्पणखा के नाक कान काट कर राम ने रावण का भारी अपमान किया, जिसे वह सह न सका और उस ने राम को अपमानित करने की ठान ली। क्योंकि राम ने उस की अबला बहन पर अपना शौर्य दिखा कर रावण का अपमान किया था, इसलिए रावण ने भी 'शठे शाठ्यं समाचरेत' की नीति अपनाई। बदले में उस ने उन की पत्नी का हरण कर के उन का अपमान किया।

इसमें संदेह नहीं कि 'वाल्मीकि रामायण' में कई जगह रावण के लिए 'दुरात्मा' शब्द का प्रयोग किया गया है और दो एक स्थलों पर तो महात्मा के साथ घृणित विशेषण भी प्रयुक्त किए गए हैं। इन का उल्लेख आगे किया जाएगा।

एक पुस्तक में एक ही पुरूष के संबंध में परस्पर विरोधी विशेषणों का प्रयोग आश्चर्यजनक है। स्मृतियों में भी परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं, परंतु उन का समाधान भी उन्हीं में मौजूद होता है। स्मृति और इतिहास की परस्पर विरोधी बातों में जमीन आसमान का अंतर है। स्मृति में परस्पर विरोधी बातों का समाधान होने के बावजूद उन की स्वतंत्र सत्ता भी रहती है। किंतु इतिहास में जहां एक व्यक्ति के संबंध में परस्पर विरुद्ध बातों का उल्लेख होगा, वहां समाधान में दोनों बातों में से एक बात को सर्वथा निर्मूल सिद्ध करना पड़ेगा।

शूर्पणखा नाक कान कट जाने पर रोती चिलाती रावण के दरबार में पहुंची। उस ने बीस भुजाओं वाले रावण को सिंहासन पर बैठे देखा :

विंशंदुंजं दशग्रीव दर्शनीयपरिच्छदम्
–वाल्मीकि रामायण,
अरण्यकांड, 32/8

परंतु सीता की खोज में लंका पहुंच कर हनुमान ने रावण को पलंग पर सोते देखा तो उस के एक मुख और दो भुजाएं थी :

तस्य राक्षससिंहस्य निश्चय क्रम महामुखात्।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/24
कांचनागंदसत्रद्धौ ददश स महात्मनः।
विक्षिरौ राक्षसेंद्रय भुजाविंद्र ध्वजोपमौ।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/12

संपाती वानरों को रावण की पहचान बताते हुए कहता है कि 'भिन्नंजनययोपयः' अर्थात उस का शरीर सुरमे से ढेर के समान काला है परंतु :

राजर्षिपितृदैत्यानां गंधर्वाणां
च योषितः.
राक्षसानां च याः कन्यास्तस्य
कामवशं गताः
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/68–69

राजर्षि, ब्राह्मण और दैत्यों की कन्याएं सुरमे के ढेर के समान काले रावण पर मोहित हो गईं। रावण का काला होना और फिर कन्याओं का मोहित होना परस्पर विरोधी बातें हैं।

शूर्पणखा ने लंका में रावण को नीचे लिखे विशेषणों से युक्त देखाः

प्राप्तयज्ञहरम् दुष्टं ब्रह्मघ्नं क्रूरकारिणम्।

हनुमान ने लंका पहुंच कर क्या देखा, इस के

बारे में लिखा गया है :

षंडगवेदविदुषां क्रुतप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषांच विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 18/2

इस श्लोक से स्पष्ट है कि राक्षस यज्ञ करते थे। रावण की प्रजा में भी यज्ञों का प्रबल प्रचार था। फिर उस के लिए 'प्राप्तयज्ञहरणम्' विशेषण कितना असंगत है, और वह शूर्पणखा के मुख से।

सीता की खोज करते हुए हनुमान ने महलों के भीतर जा कर रावण की सोई हुई पटरानियों को देखा

सहस्त्रं वरनारीणा नानावेषविभूषितम्।
परिवृत्तेऽर्धरात्रे तु पाननिद्राव शंगतम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/34

हनुमान उन के अद्वितीय सौदर्य पर विस्मित हो गए:

इमानि मुखपदि्मनी नियतं मत्तषट्पदाः।
अंबुजानीव फुल्लानि प्रार्थयंति पुनःपुनः।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 9/38–39

परंतु जब हनुमान को सीता का पता न चला तब वह एक स्थान पर बैठ कर सोचते हैं :

विरूपरूपा विकृता विवर्चसो महानता
दीर्घविरूपदर्शनाः।
समीक्ष्यत्सा राक्षसराजयोषितो लयाद्विष्ट
जनकेश्वरात्मजा।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 12/4

इस श्लोक में रावण की स्त्रियों को जो विशेषण दिए गए हैं। उन से पता चलता है कि भूमंडल पर उन स्त्रियों से बढ़कर बदशक्ल कोई स्त्री नहीं थी। एक स्थान पर पदि्मनी कहना और दूसरे स्थान पर बदशक्ल बता देना कितना विपरीत और हास्यास्पद है।

उच्छेत्तारं च धर्माणां परदाराभिमदर्शनम्।
पुरी भोगवतीं प्राप्य पराजित्य
च वासुकिम्।
तक्षकस्य प्रियां भार्यां पराजित्य
जहार यः।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 32/12–14

परंतु सारी रामायण में कहीं भी कोई ऐसा स्थल नहीं मिलता जहां रावण ने किसी परस्त्री का सतीत्व हरण किया हो या उसे बलपूर्वक अतंःपुर में लाया हो।

रावण के महलों में अन्यपूर्वा स्त्रियां न थी। एक स्थल पर उस पर तक्षक की स्त्री के हरण का कलंक लगाया जाता है और दूसरे स्थल पर उस के महलों में अन्यपूर्वा स्त्री का अभाव बताया जाता है। आखिर उस ने तक्षक की स्त्री को हर कर रखा कहां था?

इन परस्पर विरोधी बातों से स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में प्रक्षिप्त श्लोक भरे गए हैं। यह सोचना मूर्खता होगी की खुद वाल्मीकि ने एसी विरोधी बातें लिखी होंगी।

यह भी विचारणीय है कि रामायण में जहां कहीं असंबद्ध निंदात्मक बातें हैं। वे सब रावण और राक्षसों से संबंधित हैं। यह क्यों?

यह एक सर्वसम्मत बात है और रामचंद्र के भक्त भी इसे स्वीकार करते हैं कि रावण षडंग वेदज्ञ था। उस की प्रजा में वेदों का काफी प्रचार था। घर–घर वेदो का स्वाध्याय होता था। अतः रावण को वेदज्ञ और यज्ञ का अनुष्ठाता बताने वाले, तथा प्रशंसापरक श्लोक वाल्मीकिकृत हैं और निंदात्मक प्रक्षिप्त हैं।

जिस रावण की राजधानी में प्रत्येक राक्षस वेदज्ञ था, जिस के यहां बड़े–बढ़े यज्ञ होते थे, उस रावण को 'प्राप्तयज्ञहरणमदुष्टं ब्रह्मघ्न क्रूरकारिणम' आदि विशेषण दे कर राम भक्तों ने अपनी मानसिक संकीर्णता और धार्मिक अनुदारता का परिचय दिया।

बदला लेने की भावना से किए गए सीताहरण रूपी अपराध पर रावण को घृणित विशेषणों से युक्त कर राम भक्तों ने पृथ्वी और आकाश के कुलाबे मिलाए हैं। पर किसी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम से यह नहीं पूछा कि उन्होंने भाई को संकेत कर के एक अबला के नाक कान क्यों कटवा दिए। आखिर उस का अपराध क्या था? यही कि उस ने विवाह के लिए प्रार्थना की थी, जो उस समय 'अनावृताः किलपुरा' के अनुसार साधारण प्रथा थी। एक बड़ा प्रश्न यह है कि यदि राम शूर्पणखा से विवाह नहीं करना चाहते थे तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में दो टूक उत्तर क्यों नही दिया, तिल का ताड़ क्यों बनाया. झूठ बोल कर उसे लक्ष्मण के पास क्यों भेजा!

कुछ लोग कहते हैं कि रावण अत्याचारी था। वह मुनियों से रुधिर का कर लेता था। ये बातें रावण को जनता की दृष्टि में गिराने के लिए गढ़ी गई हैं।

यह कुकर्म वह सपने में भी न कर सकता था. सीताहरण के समय जटायु से रावण की मुठभेड हुई। उस के आचरण के बारे में जटायु ने कहा'

दशग्रीव स्थितो धर्मे पुराणे सत्यसंश्रयः
भ्रातस्तवं निंदितं कर्म कर्त्तु नार्हसि सांप्रतम्।
–वाल्मीकि रामायण,
अरण्यकांड, 50/3

यदि रावण ने सीताहरण से पहले कभी मुनियों से रुधिर का कर लिया होता तो जटायु उसे फटकारता और धिक्कारता। वह उस से पहले पाप (मुनियों से रुधिर का कर) की बात भी कहता। किंतु जटायु उसे सनातन धर्मानुरागी कहता है। और 'सांप्रतम' शब्द से स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि सीताहरण से पहले रावण ने कोई निंदित कर्म नहीं किया था।

सीताहरण के अपराध के बाद उस प्रकार की कपोल कल्पित कथाएं रावण को कलंकित करने के लिए रची गईं।

रावण संस्कृति का संरक्षक या विध्वंसक?

भारत के अधिकांश धार्मिक ग्रंथों में रावण को एक दुराचारी राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जिस के आतंक और पापाचार से संसार को मुक्त करने के लिए स्वयं भगवान विष्णु को राम रूप धारण करना पड़ा, धार्मिक रूढ़ियों, मान्यताओं अथवा ह्रदय पर पड़े परंपरागत संस्कारों के कारण चाहे हम उस को दुराचारी और रामकथा के खलनायक रूप में मानते हों लेकिन बुद्धि की कसौटी पर रावण का यह रूप सर्वथा अवास्तिविक, अनैतिहासिक और एकांगी प्रतीत होता है।

ऐतिहासिक रूप से रामकथा से संबंधित सर्वप्रथम ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है, जिस के अनुसार राक्षसों की तीन शाखाएं–विराध, दानव ओर राक्षस–प्रमुख थीं रावण तीसरी शाखा का नायक था। व्युत्पत्ति के आधार पर राक्षस 'रक्ष' धातु से बना है, जिस का अर्थ है रक्षा करने वालां वाल्मीकि के उत्तकांड (सर्ग 4–11) में आई एक कथा के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने जलसृष्टि कर के उस की रक्षा के निमित्त प्राणियों की उत्पत्ति की। इन मे जो क्षुधापीड़ित थे, बोल उठे, 'रक्षामः' हम रक्षा करेंगे और क्षुधित नहीं थे, बोले 'यक्षामः' अर्थात् हम यज्ञ करेंगे। इस प्रकार रक्षक प्राणी 'राक्षस' और यज्ञ करने वाले प्राणी 'यक्ष' कहलाए।

रावण का पिता आर्य और माता अनार्य थी। इस प्रकार उस क शरीर में आर्य और अनार्य दोनों का मिश्रण था। उस के पिता जगत प्रसिद्ध विश्रवा ऋषि तथा माता सुमाली असुर की पुत्री कैकसी थी। सुमाली यक्षों से अपनी खोई लंका वापस लेना चाहता था। अपने षड्यंत्र को सफल बनाने के लिए उस ने अपनी पुत्री कैकसी को पुत्र प्राप्ति की कामना से विश्रवा ऋषि के पास भेजा। ऋषि की कृपा से कैकसी के कुंभकरण, रावण और विभिषण आदि पुत्र तथा शुर्पणखा पुत्री पैदा हुई। विश्रवा मुनि ने पहले रावण के संबंध में भविष्यवाणी कर दी थी। अतएव जन्म के समय ही रावण के दस विशाल सिर, चमकीले बाल, 20 भुजाएं और काले अंजन के सामन वर्ण था।

विश्रवा की भविष्यवाणी और रावण की भंयकर आकृति के कारण माता कैकसी प्रारंभ से ही उस से घृणा करने लगी। परिणामस्वरूप रावण प्रांरभ से ही हीनग्रंथि पड़ गई, जिस ने उस के महत्त्वाकांक्षी होने में बहुत सहायता दी। रावण के दस सिर और 20 भुजाओं का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी आया है। लेकिन एक तो यह वर्णन एकाध स्थल पर ही है (शायद प्रक्षिप्त अंश हो), दूसरे आधुनिक विद्वानों ने इस को प्रतीक मात्र ही माना है। वास्तव में अधिकांश बलवानों की भांति उस की गरदन बड़ी थी। अतएव वह 'दसग्रीव' अथवा एक ही गरदन में दस गरदनों का बल रखने वाला कहलाया।

दरअसल 'दशानन' या 'दशशीश' का भाव यह है कि उस ने दसों दिशाओं को जीता अथवा वह दस प्रकार के मुकुट या दस मणियों वाला किरीट धारण करता था। यदि नाम के आधार पर ही उस को दस सिर और 20 भुजाओं वाला माना जाए तो 'दशरथ' भी दशरथ वाला माना जाएगा। वास्तव में दस सिर और 20 आंखे और 20 भुजाएं उस की अप्रतिहत विजयों, सूक्ष्म दृष्टि और अद्वितीय वीरभाव के प्रतीक हैं। इस प्रकार रावण एक सिर और दो भुजाओं वाला मानव था, जैसा वाल्मीकि रामायण के हनुमान द्वारा लंका में रावणदर्शन, अशोक वाटिका तथा मंदोदरी विलाप आदि प्रसंगो से भी सिद्ध होता है. अनार्य होने के कारण उस का वर्ण अवश्य श्यामल था, जैसा कि आज उस जाति के लोगों में पाया जाता है।

ईसा से लगभग 38 शती पूर्व आंध्रालय (आस्ट्रेलिया) निवासी रावण, जो कि एक दुर्धर्ष वीर, अति महत्त्वाकांक्षी, प्रतापी, मेधावी और साहसी व्यक्ति था, अपने नाना सुमाली द्वारा प्रेरित हो कर अपने सौतेले भाई कुबेर से अपने नाना की सोने की लंका को मुक्त कर अपने अधिकार में करने के लिए लंका जा पहुंचा. पहले तो सीधे सादे कुबेर ने अपने इस सौतेल भाई का स्वागतसत्कार किया। लेकिन उस का मंतव्य ज्ञान होने पर अपने पिता के पास जा पहुंचा। पिता रावण की शक्ति से अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए उनकी सलाह के अनुसार कुबेर ने लंका खाली कर दी और रावण ने उस पर अधिकार कर लिया।

यद्यपि लंका पहले से ही समृद्ध थी, लेकिन रावण के अधिकार में आते ही उस का यश वैभव दूरदूर तक फैल गया। महत्त्वाकांक्षी रावण इतने से ही संतुष्ट नही होसकता था, इसलिए शीघ्र ही उस ने अंगद्वीप (सुमात्रा), यवद्वीप (जावा), मलयद्वीप (मलाया), शंखद्वीप (बोर्नियो), कुशद्वीप (अफ्रीका), वराह द्वीप (मेडगास्कर) आदि दक्षिणवर्ती द्वीप समूहों पर भी विजय प्राप्त कर ली।

यह उस के अद्भुत शौर्य और पराक्रम का ही फल था कि शीघ्र ही उस ने देव, दानव, असुर, गंधर्व, यक्ष आदि तत्कालीन सभी प्रमुख जातियों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार रावण ने सर्वाधिक विस्तृत और शक्तिशली साम्राज्य की स्थापना की। इस संबंध में स्मरणीय यह है कि रावण से पूर्व कोई भी राजा यह कार्य नहीं कर सका था। निस्संदह अपने समय में रावण सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट था न केवल राजनीतिक रूप से वरन सांस्कृतिक दृष्टि से भी रावण बहुत महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली व्यक्ति था। राक्षस धर्म और संस्कृति का प्रथम व्याख्याता, स्थापक और निवारक भी रावण ही था। उस ने आदित्य (यानी–सूर्य) संस्कृति और क्षस (यक्ष) संस्कृति का समन्वय कर के राक्षस संस्कृति की स्थापना की। उस समय भारतीय आर्यों की बहिष्कार नीति के कारण दक्षिणी भारत में बहिष्कृत आर्यों की अनेक जातियां बस गई थीं। रावण ने इन सब को अपनी राक्षस संस्कृति में दीक्षित कर लिया, रावण के वीरत्व से भयभीत हो कर अन्य धर्मावलंबियों ने भी रावण की आधीनता से साथ साथ उस की संस्कृति को भी ग्रहण कर लिया, इस प्रकार शीघ्र ही राक्षस संस्कृति तत्कालीन संस्कृतियों में सर्वप्रधान हो गई। राक्षस संस्कृति का मूलमंत्र था अखिल विश्व को एक

धर्म और संस्कृति में दीक्षित करना। इस प्रकार रावण प्रथम व्यक्ति था जिस ने अखिल विश्व एकता का उद्घोष किया। इस उद्देश्य से सर्वप्रथम उसी ने वेद का संपादन, वैदिक ऋचाओं पर नवीन टिप्पणियां, मूलमंत्रों की व्याख्या और व्यवहार अध्याय में वृद्धि की। रावण द्वारा प्रतिपादित यह नवीन भाष्य ही आज 'कृष्ण यजुर्वेद' के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में भी रावण की देन बहुमूल्य है। वास्तव में उस के महापंडित्य के संबंध में दो राय नहीं हो सकती।

प्रायः आर्य ऋषियों और रामकथा के रचयिताओं ने रावण पर परस्त्रीगामी, मांसहारी और यज्ञादि विरोधी होने के आरोप लगाए हैं, जब कि ये आरोप सर्वथा निर्मूल हैं और केवल आर्यों के एकांगी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। रावण ने अधिकांश स्त्रियों को अग्निदीक्षा के पश्चात ही प्राप्त किया था, विलासिका, प्रहष्टरोमा, कुमुदवती, प्रभावती, सुभद्रा, माधुरी, अमृतप्रभा, केशिनी, कालिंदी, भद्रिका, दर्पकमाला, सौदामिनी, उज्जवला, पीरवा, अंजनिका, केशरावती, मदनसेना, चंद्रवती, वरुणसेना, विद्युंमाला तथा प्रधान महिषी मंदोदरी आदि सभी रानियों ने रावण को स्वयं वरा था, अथवा इन के पिताओं ने स्वयं ये रावण को प्रदान की थीं।

सीताहरण उस ने अपनी बहन शूर्पणखा के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिया किया था, सीताहरण वास्तव में उस के परस्त्रीगामी होने का नहीं, वरन् उस के श्रेष्ठ चरित्र और वीरत्व का परिचायक है. यदि वह चाहता तो क्या वह सीता का बलात्कार, अपमान अथवा अंगभंग नहीं कर सकता था ? लेकिन सीता को महीनों अपने अधिकार में रखने पर भी उस ने सीता को कोई कष्ट नहीं दिया। इसी प्रकार मांसाहार जब आर्यों तक में था तो फिर रावण पर ही यह आरोप क्यों ? यज्ञादि विरोध भी वास्तव में यज्ञों का नहीं वरन आर्य यज्ञ प्रणाली का था। दूसरी ओर रावण स्वयं एक बहुत बड़ा याज्ञिक था और उस ने कोई भी महत कार्य बिना यज्ञ के नहीं किया। स्वयं राम और रामकथाकार भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

दूसरी ओर राम द्वारा बालि वध, सौमित्र द्वारा शूर्पणखा अपमान और मेघनाद वध, राम द्वारा सीता की अग्निपरीक्षा और उस मे सफल होने पर भी निष्कासन क्या राम के गुण माने जाएंगे ? (रामभक्त क्षमा करें) यह सत्य है कि राम ने रावण का वध किया, लेकिन क्या विभिषण और सुषेण जैसे घर के भेदियों के बिना यह संभव था? विभीषण की शरणागति वास्तव में राम की कूटनीतिक विजय थी, जिस ने रावण की पराजय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस प्रकार रावण का वध राम ने केवल सत्य के आधार पर नहीं वरन साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी राजनीतिक और कूटनीतिक चालों का प्रयोग कर के किया था। वास्तव में, राम और रावण कि किसी भी दृष्टि से तुलना करने पर सिद्ध हो जाता है कि इन में रावण ही अधिक आदर्श था, स्वयं राम तक उस की वीरता, विद्वत्ता और अतुलनीय नीति ज्ञान के प्रशंसक थे।

प्रायः विजयादशमी अथवा दशहरे का संबंध रावणवध से जोड़ा जाता है। लेकिन गणना द्वारा यह बात असंगत सिद्ध होती है। भारतीय गणना के अनुसार दशहरा आश्विन मास की दशमी के दिन मनाया जाता है जब कि रावणवध वैशाख कृष्णा चतुर्दशी या चैत्र कृष्णा अमावस्या को हुआ था। वाल्मीकि ने सीताहरण और रामविलाप वर्षा ऋतु मे माना है, वर्ष के पश्चात आश्विन में सीता की खोज प्रारंभ हुई, दो मास खोज में लगे। माघ में सैन्यदल चला और एक मास में समुद्र पार किया, इस प्रकार युद्ध चैत्र बैशाख में हुआ जो 84 दिन चला। अतएव गणना से सिद्ध होता है कि दशहरे और रावणवध में बहुत समय का अंतर है।

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि रावण महान पंडित था, रामकथाकारों ने उस का जो असंगत चित्रण किया है वह केवल आर्य अनार्य के पारस्परिक भेदभावों और मनोमालिन्य के कारण किया है। अन्यथा रावण जैसा पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी उस युग में दूसरा नहीं था।

साभार : कितने खरे आदर्श हमारे ?
सं. : राकेश नाथ

सेवा में,

नाम श्री.....

पता .....

.....

.....

सामाजिक बदलाव के लिए सत्ता पर कब्जा जरूरी - कांशीराम

नूरमहल (पंजाब) में शहीदी यादगार सम्मेलन हुआ

नूरमहल, 16 फरवरी (विशेष प्रतिनिधि द्वारा) : सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक मुक्ति के लिए भारत की राजनीतिक ताकत दलितों के हाथ में होना जरूरी है ।

यह विचार आज बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय कांशीराम ने नूरमहल में फरवरी 1992 मे हुए चुनावों के दौरान मारे गये बसपा के 9 कार्यकर्ताओं की याद में आयोजित शहीदी को सम्बोधित करते हुए रखे । आगे आपने कहा कि पंजाब की धरती सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक मुक्ति के इस संघर्ष में कभी भी पीछे नहीं रहा। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोविन्द सिंह जी तक दसो गुरुओं ने किये संघर्ष इसी उद्देश्य से सम्बन्धित थे। आपने यह भी कहा कि आज समूचे देश में इस परिवर्तन की जरूरत महसूस की जा रही है इसीलिए हम इन गुरुओं की वाणियों से शिक्षा लेकर इस बदलाव के लिए आगे बढ़ सकते है। आगे आपने जोर देते हुए कहा कि राजनीतिक सत्ता पर दलितों का कब्जा होना बहुत जरूरी है इसलिए बसपा इस दिशा में बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रही है।

ब्राह्मणवादी शक्तियाँ हमारे हौंसले गिराने के लिए नूरमहल जैसे काण्ड करती है

माननीय कांशीराम जी ने आगे कहा कि अब वह समय निकल गया जो कि हमारी मुक्ति के आट मे दूसरी ब्राह्मणवादी पार्टियाँ सरकार बना लेती थी। अब हमें अहसास हो गया है कि हम अपने पैरों पर आप खड़े हो सकते है। जब भी बहुजन समाज इस दिशा की ओर बढ़ता है तभी यह बात ब्राह्मणवादी निजाम व दूसरी पार्टियों को पसंद नहीं आती है हमारे हौंसले को गिराने के लिए ही नूरमहल काण्ड जैसी हरकत करते हैं।

कांग्रेस की हालत पानी से भी पतली

आपने कहा कि आज लोगों के इकट्ठे को देखकर व मुल्क में हवा का रूख उस आधार पर यकीन है कि कांग्रेस की हालत पानी से भी पतली करके रख देंगे। आपने भाजपा के बारे में कहा कि भाजपा के राज वाले पाँच राज्यों के नतीजे सामने है। अब नवम्बर 1994 में कांग्रेस शासन वाले पाँच राज्यों के नतीजे दलितों के 'दिल्ली तख्त' पर काबिज होने की सम्भावना को हकीकत में बदल देवेंगे।

आपने पंजाब बसपा लीडरशिप को भी सचेत करते हुए कहा कि जब बहुजन समाज इकट्ठे होकर हौंसले से आगे बढ़ता है तो उसे ब्राह्मणवादियों के हमले उन्हें पीछे नही हटा सकते परन्तु नेतृत्व की कमी दलितों की चाहत को बहुत नुकसान कर सकती है आपने स्पष्ट इशारा करते हुए कहा कि यदि जमी हुई लीडरशिप दलितों के लिए काम नहीं करती है तो उसमें सीधा दखल देकर भी ज्यादा काम कराया जा सकता है। आपने बसपा कार्य कर्ताओं को सलाह दी कि वह खरे–खोटे की पहचान करना सीखे व खरे नेतृत्व के पीछे भी एकमत होना जरूरी है एक दूसरे की टांग खेंचने का कार्य करने से सही नेतृत्व नहीं उभर सकता। आपने कार्यकर्ताओं को सलाह दी की हमें सूझवान बनना बहुत जरूरी है तभी हम एक साथ आगे बढ़ सकते है आपने इस अवसर पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि नौजवान कार्यकर्ताओं में ज्यादा लगन व उत्साह है हमें चुनाव के दौरान हुए शहीदों की याद रखते हुए तैयार रहना चाहिए, परन्तु होशियार नेतृत्व वही होता है तो कम से कम कुर्बानी देकर कौम के लिए अधिक कार्य कर सकें।

ब्राह्मणवादी धोखों के लिए दलित समाज स्वयं जिम्मेदार

माननीय कांशीराम जी ने दलित शोषित समाज को आगाह करते हुए कहा कि ब्राह्मणवादी समाज द्वारा हजारों वर्षो से हमारे साथ किये जा रहे धोखें पर धोखे के लिए हम स्व्यं जिम्मेदार है। आपने कहा कि 'जदों असी खुद बन्दे बण गये ता ब्राह्मणवादियों नूं बन्दे दे पुत बणा लवांगे' आपने खुशी जाहिर कि अब दलित समाज बंदा (इन्सान) बनने की ओर बढ़ रहा है इसलिए देश कि सियासी फिजा (राजनीतिक तौर तरीकों) का रूख भी बदल रहा है आपने कहा कि देश भर में दलितों की इस बढ़ती जागरूकता व शक्ति के उभार देखकर जिस भी सूबे (राज्य) में इकट्ठे होने में कामयाब होते दिखते है उसी राज्य की सरकार पहले या बाद में दलितों के हक में दो चार ऐलान करने को मजबूर है आपने इस बारें में गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आन्ध्रा कर्नाटक व पश्चिमी बंगाल के अपने दौरों के उदाहरण दिये ।

इस शहीदी यादगार सम्मेलन को माननीय कांशीराम जी के अलावा सतनाम सिंह कैंथ (नेता विरोधी दल) बसपा पंजाब विधान सभा), विधायक हरगोपाल सिंह, विधायक सिंगारा राम संहूंगड़ा, विधायक अवतार सिंह करीमपुरी, विधायक गोपाल सरोहा, विधायक राज सिंह खेड़ी, विधायक निरमल सिंह निम्मा, विधायक धलदेव सिंह भट्टी, विधायक रजिन्दर कुमार, पूर्व सांसद हरभजन लाखा, सांसद मोहन सिंह फलियांवाला, मेजर प्रीतपाल सिंह, स. हरभजन सिंह ओसान, शीला रानी (बसपा महिला बिंग प्रधान बसपा), प्रवीण बंगा, पवन टीनू बलजीत सिंह मचाकी, सरदूल सिंह, डॉ. हरजिन्दर जखू, जसविन्दर तलवण्डी, सुरिन्दर कौर, हरदेव कौर, मानसिंह मनहेड़ा, जसपाल गड्डू, ऊंकारी राम, डी.पी. खोसला, मेजर सोमनाथ, परमजीत गौसल, स्वर्ण खोसला, स्वर्ण कौर भारती, रघुवीर सिंह, सेवा सिंह सेखांग आदि ने सम्बोधित किया।

इस सम्मेलन में माननीय कांशीराम जी द्वारा 9 शहीदों और जख्मियों के परिजनों को सिरोपे भेंट कर सम्मानित किया दूसरे शहीदीं की यादगार के लिए शहीदी यादगार भवन का नींव पत्थर रखा। सम्मेलन में लगभग 50 हजार से अधिक लोग शामिल हुए ।

सम्मेलन में मिशनरी कलाकारों में एस.एस. आजाद, मोहन बंगड़, हरनाम बहलपुरी, हरमेश हाकम सिंह एण्ड पार्टी ने जागृति गीत पेश करके श्रोताओं को मोह लिया, छोटे बच्चों में नीलम (ब्लाक महिलपुर, राजवंत सिंह, लखबीर सैनी द्वारा अम्बेडकरवादी गीत पेश किये मंच का संचालन ओमप्रकाश सिद्धम ने किया ।

साभार – बहुजन संगठक, नई दिल्ली, सोमवार, 7 मार्च 1994 हिन्दी सप्ताहिक
पेज सं. 1, वर्ष 14